नाद-निनाद

मेरे परिवार की मौलिक रचनाएँ

संकलन : वीणा सहस्रबुद्धे

गांधर्व संगीत महाविद्यालय मंडल
वाशी, नवी मुंबई

© 2000
श्रीमती वीणा सहस्रबुद्धे

प्रकाशक :
अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडल,
गांधर्व निकेतन, प्लॉट 5, सेक्टर 9 ए,
वाशी, नवी मुंबई 400 703.

मुद्रक :
'मुद्रा', 383 नारायण पेठ,
पुणे 411 030.

मुखपृष्ठ :
सुजित पटवर्धन

वितरक :
पॉप्युलर प्रकाशन प्रा. लि.,
35 सी, पं. मदनमोहन मालवीय रोड,
ताडदेव, मुंबई 400 034.

मूल्य :
रु. 185/-

मेरे संगीत जीवन के प्रेरणा स्थान
मेरी माँ, पिताजी और बड़े भाईसाहब
उनकी पुण्यस्मृति को सादर समर्पित

अनुक्रम

प्रातः गेय राग

1. भैरव 3
2. अहीर भैरव 6
3. नट भैरव 8
4. बंगाल भैरव 13
5. भैरवी 14
6. कोमल रिषभ आसावरी 15
7. भटियार 17
8. जोगिया 20
9. देशकार 22
10. गुर्जरी तोड़ी 23
11. भूपाल तोड़ी 24

अपरान्ह व सायं गेय राग

12. शुद्ध सारंग 31
13. मध्यमाद सारंग 33
14. भीम 34
15. भीमपलासी 36
16. मारवा 37
17. पूरियाधनाश्री 40
18. मुलतानी 42
19. मधुवंती 47
20. धानी 48
21. अंबिका 51

रात्रि गेय राग

22. यमन 61
23. गोरखकल्याण 64
24. पूरिया-कल्याण 66
25. काफी 67
26. भूप 68
27. मेघ-मल्हार 72
28. मियाँमल्हार 74
29. गौडमल्हार 76
30. सावनी 78
31. दुर्गा 82
32. वाचस्पति 86
33. नारायणी 88
34. बसंत 90
35. बहार 93
36. तिलक-कामोद 94
37. कामोद 95
38. शंकरा 97
39. हंसध्वनि 98
40. रागेश्री 100
41. बागेश्री 103
42. मधुकौंस 104
43. मालकौंस 107
44. जोगकौंस 111
45. नायकी कानडा 113
46. आभोगी कानडा 114
47. कौंसी कानडा 115
48. बिहाग 117

प्रस्तावना

'नाद-निनाद' नामक बंदिशों की इस पुस्तक का प्रकाशन मंडल कर रहा है। यह मेरे लिये प्रसन्नता का विषय है। बोडसजी का मंडल से दीर्घकाल तक, अत्यन्त निकट का संबंध रहा है। संयोगवश उनके जन्मशताब्दी वर्ष की समाप्ति के साथ, गांधर्व महाविद्यालय मंडल के जन्मशताब्दी वर्ष का शुभारंभ हो रहा है।

गांधर्व महाविद्यालय की परंपरा 1901 में निर्माण हुई। स्व. पं. विष्णु दिगंबरजी के अनेक शिष्यों ने देशभर संगीत के प्रचार हेतु जो कार्य किया, उसके फलस्वरुप आज हम यह कह सकते हैं कि संगीत को प्रतिष्ठित समाज में मान्यता अवश्य मिली। शास्त्रीय संगीत आज सर्वसाधारण जनता तक, संगीत विद्यालयों द्वारा पहुँच गया है। विद्यालयीन शिक्षण का एक निश्चित पाठ्यक्रम होता है। उस पाठ्यक्रम के आधार पर विद्यार्थी का भलेही संगीत का सम्यक् विकास न भी हो, किन्तु हर पहलू का दर्शनमात्र निश्चित हो जाता है। अपनी कला लोगों के सामने कैसे पेश की जाय – यह तो अनुभव की बात है।

कलाकार बनने का कोई निश्चित मंत्र (formula) नहीं है। गुरु के योग्य मार्गदर्शन से, शिष्य नियमित रियाज़ द्वारा, इस कला को भी हासिल कर सकता है यदि उस शिष्य में, कलाकार बनने की तीव्र इच्छा हो और अपने संगीत और गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना हो। अतः विद्यालयीन शिक्षण से महफ़िल के कलाकार बन ही नहीं सकते – यह कहना उचित न होगा। पं. विष्णु दिगंबरजी के ऐसे कई शिष्य सफल कलाकार सिद्ध हो चुके हैं। संगीत जगत् में यह सभी जानते हैं। शंकररावजी के दोनों अपत्त्य श्री. काशीनाथ बोडस और श्रीमती वीणा सहस्रबुद्धे इसके ठोस उदाहरण हैं।

चि. वीणा ने इस पुस्तक में श्री. काशीनाथजी और शंकररावजी की बंदिशों का भी समावेश किया है और परंपरा का जतन किया है। मै वीणा को मनःपूर्वक आशीर्वाद देता हूँ, कि बंदिशों की रचना करने का उसका यह उपक्रम, आगे

आने वाले वर्षो में भी वह जारी रखे और श्रोताओं को अपने गायन से तृप्त करे।

23 अप्रैल, 2000

बलवन्त जोशी
अध्यक्ष,
अखिल भारतीय गांधर्व
महाविद्यालय मंडल, वाशी

मनोगत

मेरे प्रिय मित्रों,

आज यह बंदिशों की पुस्तक आप लोगों को देते हुए मुझे बड़ी खुशी हो रही है। इस पुस्तक की योजना मेरे बड़े भाईसाहब एवं गुरु स्व. पं. काशीनाथ शंकर बोडस और स्वयं मै, दोनों के मन में गत कई वर्षो से थी, आज वह इच्छा पूर्ण हुई। मेरे पिताजी स्व. पं. शंकर श्रीपाद बोडसजी की जन्मशताब्दी वर्ष में इस पुस्तक का प्रकाशन हो रहा है। – यह मेरे लिये विशेष समाधान का विषय है।

शास्त्रीय संगीत की शिक्षा रंजक व सहज ग्राह्य बनाने की दृष्टि से पिताजी ने अनेक मौलिक प्रयोग किये। उनका विचार था कि बच्चों के समक्ष संगीत के शास्त्रीय पक्ष को प्रमुख न करके उसके रंजन पक्ष को उजागर किया जाना चाहिए। पिताजी व बड़े भाईसाहब ने, सीखने आये हुए हर एक विद्यार्थी की प्रतिभा, ग्रहण शक्ति, और आयु का विचार करके विविध प्रकार की रचनाएँ कीं हैं। बच्चों को राग के स्वर याद कराने के लिये आसान सरगम गीतों की रचना की तथा बालकों को रुचिकर लगने वाले विषयों से संबंधित अनेक गीतों को आकर्षक धुनों में बाँधा। इस पुस्तक में उनमें से कुछ सरगम गीतों का मैने समावेश किया है।

मेरे भाईसाहब पं. काशीनाथजी स्वयं एक सफल व कुशल गायक होने के कारण उनकी रचनाओं में एक विशेष आकर्षण है। संगीत जगत् में कुछ नवीन प्रयोग करना है – ऐसी दृष्टि से उन्होंने बंदिशें नहीं बनाईं बल्कि वे बंदिशें अंतःप्रेरणा से प्रभावित होकर नैसर्गिक रुप में स्वयं बनकर आई हैं। उन बंदिशों में प्रवाह है मौलिकता है और चिंतन है। महफ़िल में प्रस्तुत करने की भावना से वे बंदिशें स्वाभाविक बनी हैं।

'बंदिश' इस विचार पर मैंने एक लेख इस पुस्तक में समाविष्ट किया है। जिसमें मैने 'बंदिश' शब्द का अर्थ, उसका महत्त्व, उपयोगिता, रचना सौन्दर्य पर प्रकाश डाला है।

जब से मैं संगीत समझने लगी हूँ, तब से मैं रागों में रास्ते खोजना तथा बंदिश बनाना ये दोनों कार्य करती आई हूँ। इसके परिणाम स्वरुप मैं अपने मन के अनुसार गा सकती हूँ। किसी और का रुप धारण करके मैं जी रही हूँ ऐसी भावना मुझे नहीं होती। आज मैं स्वरचित बंदिशों को आपके सामने रख रही हूँ। जो कलाकार इसे गाने के लिये योग्य समझें वे इनका अवश्य प्रयोग करें – मुझे प्रसन्नता होगी।

इस पुस्तक में प्रकाशित जो बंदिशें मेरे ध्वनिमुद्रणों में पहले से उपलब्ध हैं, उनकी सूची पुस्तक के अंत में अभ्यासकों के लिये समाविष्ट की है।

ऋण-निर्देश

बंदिशों के स्वरलेखन में मुझे श्रीमती अंजली मालकर एवं कु. रंजनी रामचन्द्रन का अमूल्य सहयोग प्राप्त हुआ है। इस स्वरलेखन को हस्तलिखित रुप में ही प्रकाशित किया है, ताकि बिना किसी मुद्रण दोष के स्वरलिपि आसानी से संगीत के अभ्यासकों तक पहुँचाई जा सके। कु. रंजनी रामचन्द्रन ने इस पुस्तक के सभी बंदिशों के स्वरलेखन की सुवाच्य प्रतिलिपि बनाई है।

मुद्रा प्रेस के श्री. सुजित पटवर्धनजी इतने व्यस्त होते हुए भी उन्होंने सही समय पर पुस्तक तैयार कर मुझे सौंपी है। साथ ही साथ हस्तलिखित स्वरलेखन को बड़े ही सुंदर ढंग से पुनर्मुद्रित किया है। मुद्रा प्रेस के पटवर्धनजी व उनकी टीम को मैं धन्यवाद देती हूँ।

अंत में मेरे पति डॉ. हरि वासुदेव सहस्रबुध्दे जी का नामोल्लेख करना आवश्यक समझती हूँ, जिनके प्रोत्साहन, सहयोग के बिना यह पुस्तक संभव नहीं थी।

23 अप्रैल, 2000

वीणा सहस्रबुध्दे

बंदिश

भारतीय संगीत इस देश की प्राचीनतम कलाओं में से एक मानी गई है। संगीत इस शब्द में ही कंठ संगीत, वाद्य संगीत और नृत्य – इन तीनों कलाओं का समावेश है।

आज मै हिंदुस्थानी शास्त्रीय संगीत की सर्वाधिक लोकप्रिय ख्याल शैली – इस नाम से जानी जाती है, उसी के विषय में आपको कुछ बताना चाहूँगी। वैसे यदि देखा जाय तो ख्याल शब्द का अर्थ है – 'विचार' या 'कल्पना'। इस शैली में गीत के शब्द कम होने के कारण राग विस्तार की ओर अधिक ध्यान दिया जाता है। ख्याल शैली में सर्वसाधारण दो बंदिशें विलम्बित व द्रुत बंदिश गाई जाती है। यहाँ अब हम पहले बंदिश का अर्थ, उसका राग विस्तार में महत्त्व उसकी विशेषता, इन बातों पर गौर करेंगे।

बंदिश मूलतः फारसी शब्द है, बल्कि इस शब्द का अर्थ बंदिश इस शब्द में ही समाया हुआ है। आदर्श बंदिश में राग के पूर्ण स्वरूप का बीज मिलता है, जिसकी सहायता से हम उसका विस्तार करते है। गायन के लिए उपयुक्त बंदिश के मुख्य अर्थ को ही ध्यान में रखकर यहाँ हम आगे बढ़ने वाले है।

सर्वप्रथम कलाकार को बंदिश की आवश्यकता क्यों महसूस होती है? या दूसरें शब्दो में इस बंदिश रचना की प्रक्रिया क्या है – इसे देखेंगे।

कलाकार सृजनशील व संवेदनशील व्यक्ति होता है। जीवन की विभिन्न परिस्थितियों के कटु व सुखद अनुभव किए हुए क्षणों से, कलाकार भी प्रभावित होता है, और अपनी कल्पना से उसे एक धुन सूझती है। और वह चाहता है, कि यह धुन, दीर्घकाल तक संगीत जगत् में बनी रहे, और श्रोता भी उसका आनंद उठा सके। इस प्रक्रिया में कलाकार के मन में उस राग का एक काल्पनिक नक्शा तैयार ही रहता है – उसे ठोस और स्थाई रूप देने के लिए, वह गायन के अनुकूल शब्दों का चुनाव और साथ ही साथ स्वररचना भी तैयार करता है। यहाँ यह

आवश्यक नहीं, कि उसे पहले धुन और बाद में शब्द सूझते हों – कभी-कभी तो पूरी बंदिश तैयार होकर उसके सामने आती है। ऐसी बंदिश में लय, ताल, ठेका, राग में प्रयुक्त स्वरों की योजना, मुखड़ा, सम का स्थान, ठहराव की योजना आदि बातें कलाकार की प्रतिभा को दर्शाती है। इस प्रकार की रचना ही बंदिश कहलाती है।

ख्याल गायन में यदि किसी बात को विशेष महत्त्व दिया जाता है, तो वह बंदिशों को दिया जाता है। पुराने बुज़ुर्ग तो यहाँ तक कहा करते थे – "राग नियम की क्या जरूरत है, बंदिश को देखो और उसकी बढ़त करो।" उनके ऐसे कहने का ठोस कारण भी है। – क्योंकि राग का अपना एक चेहरा होता है। जब हमें किसी व्यक्ति का स्मरण होता है, तो सबसे पहिले उसका चेहरा ही हमारे सामने आता है। उस व्यक्ति के अन्य शरीर अंगो पर हमारा ध्यान नहीं के बराबर होता है। राग गायन में बंदिश के माध्यम से राग के चेहरे को तुरंत पहचान लिया जा सकता है। जिस कलाकार के पास जितनी अधिक बंदिशों का संग्रह होगा, राग का स्वरूप उसे अधिक स्पष्ट होगा, क्योंकि बंदिश को ही आधार मानकर कलाकार रागविस्तार करता है। और यही कारण होगा – कि पुराने ज़माने में बुज़ुर्गों का यह आग्रह रहता था, कि कम से कम एक राग में 15/20 बंदिशें होनी आवश्यक है। स्वाभाविक है कि एक ही राग में अनेक बंदिशें हों, तो लय, ताल मुखड़े के अनुसार उसकी सजावट बदलेगी याने कि स्वरविस्तार की प्रक्रिया में बदलाव आएगा, बढ़त अलग ढंग से होगी।

हर एक बंदिश की लय और ताल भी सुनिश्चित होते है। क्योंकि उन बंदिशों की रचना, लय एवं ताल के वज़न को ध्यान में रखते हुए बाँधी गई है। कुछ पारंपरिक विलम्बित ख्याल ऐसे है – जो दो आवर्तन में रचे गए है। आज यदि उस ख्याल को एक ही आवर्तन में गाया जाए तो वह बहुत ठ्राय लय हो जाएगी उस ख्याल की बढ़त भी ठ्राय लय में करनी होगी, साथ ही साथ मुखड़े का वज़न भी बदलना होगा। कहने का तात्पर्य मूल बंदिश जैसी हो, वैसी ही गाई जाए।

राग गायन की लगभग समस्त बंदिशों में मुख्यतः पश्चिमी, पूर्वी हिन्दी, बिहारी और राजस्थानी और बृज बोली आदि अनेक भाषाओं का उपयोग सर्वाधिक मात्रा में हुआ है। जो कुछ भी हो, यहाँ भाषा की व्याकरण शुद्धता को

प्राधान्य न देते हुए शब्दों के नाद-माधुर्य को प्राधान्य है। बंदिश पेश करते समय कलाकार, उसके काव्यार्थ को आधार रूप में लेकर सांगीतिक आशय श्रोताओं तक पहुँचाता है। इसीलिए यहाँ एक सावधानी ज़रूर बरतनी पड़ती है कि बंदिश के शब्दों के उच्चार साहित्यिक दृष्टि से न होकर सांगीतिक दृष्टि से हो।

प्राय: बंदिशों के विषय भक्ति और श्रृंगार, प्रकृति, ऋतु, उत्सवों के वर्णन, गायन-वादन संबंधी आदि विषय होते हैं।

ख्याल शैली में सर्वसाधारण दो बंदिशें – विलम्बित व द्रुत बंदिश गाई जाती है। प्रत्येक ख्याल के पेशकारी में तीन बातें देखी जाती है।

1) बंदिश जैसी है – वैसी गाना।

2) स्थाई और अंतरे का विस्तार। जिसमें आलाप, बोलआलाप बेहलावा, तान बोलतान आदि का विस्तार भी आता है।

3) बंदिश के मुखड़े के वज़न को कायम रखना।

बंदिश के दो भाग होते हैं। स्थाई अधिकतर पूर्वांग में और अंतरा उत्तरांग में होता है। कुछ बंदिशें ऐसी हैं जिनकी स्थाई का मुखड़ा तार सप्तक में ही है।

इस प्रकार आपने देखा कि ख्याल गायन में बंदिश का अपना एक अलग, अनोखा स्थान है, जो कि राग की बढ़त में सहायक सिद्ध होता है। पारंपरिक बंदिशें, जो कि इतने वर्षों से कलाकार गाते बजाते चले आ रहे हैं, और फिर भी उन रचनाओं का सौंदर्य कुछ ऐसा है, कि वे अभी भी नित्य नई महसूस होती हैं। आज हम कई नवीन रचनाकारों की भी बंदिशें सुनतें है। वे भी लोकप्रिय हो रहीं हैं।

मै तो ऐसा कहूँगी कि सुंदर, सुघड़ बंदिश वही है जो भली भाँति बिना किसी अटकाव के गाई जा सके।

वीणा सहस्रबुद्धे

प्रातः गेय राग

राग – भैरव

रूपक

स्थाई

						३ मप	गम	
० ध	–	–	२ प	–		३ मप	गम	
० रे	–	–	२ सा	–		३ धनी	सारे	
० सा	गम	पध	२ प	गम		३ पध	नीसां	
० नीध	पम	गम	२ ध	गम		३ ध	गम	

अन्तरा

						३ मप	गम	
० सां	नी	ध	२ म	प		३ ग	म	
० ध	–	नी	२ सां	–		३ गं	रें	
० सां	रें	सां	२ नी	ध		३ सां	नी	
० ध	–	प	२ मप	गम		३ पध	नीसां	
० नीध	पम	गम	२ ध	गम		३ ध	गम	

राग – भैरव

द्रुत एकताल

स्थाई: शंकर गिरजापति, वामदेव महादेव
पार्वती सुहावे, नंदी गण संग डोले ॥
अन्तरा: गले मुंड माल सोहे, आसन सोहे मृग छाला
शंख नाद घुंघरू और, बाजे डमरू ॥

स्थाई

ध	–	पम	प	म	म	ग	–	म	रे	–	सा
शं	ऽ	कऽ	र	गि	र	जा	ऽ	प	ति	ऽ	ऽ
x		0		2		0		3		4	
सा											
ध	–	ध	सा	–	सा	रे	रे	ग	रे	–	सा
वा	ऽ	म	दे	ऽ	व	म	हा	ऽ	दे	ऽ	ब
x		0		2		0		3		4	
सा	–	सा	सारे	ग	रेसा	रे ग	–	म ग	रे	सा	–
पा	ऽ	र्व	तीऽ	ऽ	सुऽ	हा	ऽ	ऽ	वे	ऽ	ऽ
x		0		2		0		3		4	
म		नी									
ग	–	ध	–	नी	सां	धनी	सांनी	धप	मग	रेसा	नीसा
नं	ऽ	दी	ऽ	ग	ण	संऽ	ऽऽ	गऽ	डोऽ	ऽऽ	लेऽ
x		0		2		0		3		4	

अन्तरा

म				नी							
ग	ग	–	ध	–	ध	धनी	सां	नी	रें	सां	सां
ग	ले	ऽ	मुं	ऽ	ड	माऽ	ऽ	ल	सो	ऽ	हे
x		0		2		0		3		4	
नी								नी			
ध	–	नी	सां	रें	सां	नी	सां	ध	–	प	–
आ	ऽ	स	न	सो	हे	मृ	ग	छा	ऽ	ला	ऽ
x		0		2		0		3		4	

		नी	प	प							
धनी	सां	ध	ध	म	म	म	प	मप	धप	म	ग
शं ऽ	ऽ	स्व	ना	ऽ	द	घुं	घ	रूऽ	ऽऽ	औ	र
x		0		2		0		3		४	

गम	गम	पम	पध	पध	नीध	सांरें	सांनी	धप	मग	रेसा	नीसा
बाऽ	ऽजे	ऽऽ	ऽऽ	ऽम	ऽऽ	रूऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
x		0		2		0		3		४	

राग – अहीर भैरव

मध्यलय त्रिताल

स्थाई: आई बसंत की ऋतु आई
चमेली फूली चंपा खिली
बौर फुले अंबुवा की डारी ॥
अन्तरा: चलो री सखि मधुबन चलिये
आयेंगे कान्हा लेकर गुलाल ॥

स्थाई

												सां	-	नीध	पध प
												आ	ऽ	ईऽ	ऽऽ ब
															3
म	-	-	प म	ग रे	-	ग	म	पध	नीसां	-	सां	-	नीध	पध	प
सं	ऽ	ऽ	त	की	ऽ	ऋ	तु	आऽ	ऽईऽ	ऽऽ	आ	ऽ	ईऽ	ऽऽ	ब
x				2				0				3			
म	-	-	प म	ग रे	-	सा नी	नी	ग रे	-	सा	रे	नी	-	सा	- - रे
सं	ऽ	ऽ	त	की	ऽ	ऋ	तु	आ	ऽ	ई	च	मेऽ	ऽली	ऽऽ	फू
x				2				0				3			
म	-	-	ग	म	पध	नी	धप	ध	प	-	ध	नी	ध	प	ध
ली	ऽ	ऽ	चं	ऽ	पाऽ	ऽ	खिऽ	ली	ऽ	ऽ	बौ	ऽ	र	ऽ	फु
x				2				0				3			
धनी	सां	-	धनी	सांरें	सांनी	धप	मग	पम	गरे	सा-					
लेऽ	ऽ	ऽ	अंऽ	बुऽ	वाऽ	कीऽ	ऽऽ	डाऽ	ऽऽ	रीऽ					
x				2				0							

अन्तरा

नी | धप - ध - - - नी
- य | नोऽ ऽरी ऽऽ स
३

| सां - - ध | नी सां - रें | गं रें सां सांरें | गं रें सां सां
| खि ऽ ऽ म | धु ब ऽ न | - य लि ये आऽ | ऽ यें ऽ गे
x ० ३

| नीसां नीरें सांनी धनी | सांनी धप मग पम | गरे सानी सा
| काऽ ऽन्हा ऽऽ लेऽ | कऽ रऽ गुऽ लाऽ | ऽऽ लऽ ऽ
x २ ०

राग – नट-भैरव

वि. एकताल

स्थाई : शंकर शरण तोरे, कैलासपति राजे
नाद डिमडिम डमरू बाजे ॥
अन्तरा : आदि नटराज शेष गले सोहे
शोभे संग गिरिजा गणराज ॥

स्थाई

| नीसारेग रेसा सानीरेसा |
| शं ऽ ऽ ऽ कर शऽर ण |
| ४ |

रेसासा नीध-- ध-सा-	नीसागरेरेग ग-मरे	गमपप गमध-धधनीसांनी
तोऽऽऽ रेऽऽऽ	कैऽलाऽसऽ पऽतिऽ	राऽजेऽ नाऽदऽ डिऽऽऽम,
x	०	२

नी-सांसां नीसांनीसांरेंगंरंरेंसां	ध-प- मधधपपम	गरेगमरेसा
डिऽमऽ डमरूऽऽऽऽऽऽ	बाऽऽऽ जेऽऽऽऽ	ऽऽऽऽऽ
०	३	४

अन्तरा

| गम धऽधनीसांऽनी |
| आऽदिऽनऽऽटऽ |
| ४ |

सां--- सां---	नी--सां नीसांरेंगंरेंसां	रेंरेंसांनीसांनीसांरेंसांसां ध प,गमध
राऽऽऽ जऽऽऽ	शेऽऽष गाऽऽऽलेऽ	सोऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽहेऽशोऽभे
x	०	२

धनीसांरेंसां नीसांध-प	मधधपपम रेगमरे-	सा
सं ऽऽऽग गिरिजाऽ	गणऽऽऽ राऽऽऽऽ	ज
०	३	४

राग – नट-भैरव त्रिताल

स्थाई: गुनीजन बखाने गुन की,
चर्चा करत सुर ताल की ॥
अंतरा: स्वरसाधना में लीन,
राग के भेद नाथ अब जानो,
चर्चा करत सुर ताल की ॥

स्थाई

												रे	ग	म	ध पम
												गु	नी	ज	न बऽ
															3
प	–	–	–	ग	रे	ग	म	रे	–	सा	–	ध –	नी –	सा	
खा	ऽ	ऽ	ऽ	ने	ऽ	गु	न	की	ऽ	ऽ	ऽ	चऽ	ऽर्चा	ऽ	क
x				2				0							3
रे	ग	म	प	गम	नीध	सांनी	रेंसां	नीध	पम	गरे					
र	त	सु	र	ताऽ	लऽ	कीऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ					
x				2				0							

अन्तरा

												ग	म	नी ध –	ध
												स्व	र	सा	ऽ ध
															3
धनी	सां	–	–	सां	–	धध	नीसां	रें	–	सां	धनी	सां	सां ध	–	पम
नाऽ	ऽ	ऽ	ऽ	में	ऽ	लीऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	न	राऽ	ऽ	ग	ऽ	केऽ
x				2				0				3			
प	–	म	ग	रे	रे	ग	म	ग रे	–	सा	–	ध –	नी	–	सा
भे	ऽ	द	ना	ऽ	थ	अ	ब	जा	ऽ	नो	ऽ	चऽ	ऽर्चा	ऽ	क
x				2				0				3			

रे ग म प	गम नीध सांनी रेंसां	नीध पम गरे
र त सु र	ताऽ लऽ कीऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ
x	२	0

राग – बंगाल-भैरव

द्रुत एकताल

स्थाई : शंकर डमरु बाजे,
महादानी, महाज्ञानी, तुम हो सबके स्वामी ॥
अंतरा : शीश गंग-चंद्र भाल,
व्याघ्रांबर अंग सोहे,
विराजे रुंड माल,
नाचत गिरिजा समेत ॥

स्थाई

सां	–	ध॒	ध॒	ग	म	मनी	धसां	नीरें	सांनी	धनी	सां
शं	ऽ	क	र	ड	म	रुऽ	बाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	जे
x		0		2		0		3		4	

सां	नी ध॒	ध॒	ध॒	म	म	ग	म	म	रे	–	सा
म	हा	ऽ	दा	ऽ	नी	म	हा	ऽ	ज्ञा	ऽ	नी
x		0		2		0		3		4	

सा	रे	ग	–	म	ध॒	मध॒	मुग	मग,	गम	धनी	सां
तु	म	हो	ऽ	स	ब	केऽ	ऽस्वा	ऽऽ	मीऽ	ऽऽ	ऽ
x		0		2		0		3		4	

अन्तरा

ग	–	म	नी ध॒	–	नी	सां	–	सां	रें	–	सां
शी	ऽ	श	गं	ऽ	ग	चं	ऽ	द्र	भा	ऽ	ल
x		0		2		0		3		4	

ध॒	–	नी	–	सां	गं	गं	–	मं	रें	–	सां
व्या	ऽ	घ्रां	ऽ	ब	र	अं	ऽ	ग	सो	ऽ	हे
x		0		2		0		3		4	

									ध						
रें	सांनी	रेंसां	ध	-	म	ग	-	म	धनी	-	सां				
ग	ले	बि	रा	ऽ	जे	रूं	ऽ	ऽ	साऽ	ऽ	ल				
x		0		2		0		2		4					

ग	-	म	ध	नी	सां	रेंसा	नीध	नीध	मग	मग	रेसा				
ना	ऽ	च	त	गि	रि	जाऽ	ऽऽ	सऽ	मेऽ	ऽऽ	तऽ				
x		0		2		0		2		4					

राग – बंगाल भैरव

मध्यलय त्रिताल

स्थाई

												ग	म	नीध	ऽनी धऽ
												त	न	तुंऽ	ऽद्रे ऽऽ
															३
धनी	सां	–	–	ध	म	ग	म	रे	–	सा	ध	नी	सा	–	रे
दाऽ	ऽ	ऽ	ऽ	नी	ऽ	त	दि	य	ऽ	न	त	न	दे	ऽ	रे
x				२				०				३			
रे	ग	–	म	–	म ध	–	ध नी	–	नी सां	–	ग				
ना	ऽ	दीं	ऽ		दीं	ऽ	दीं	ऽ	तों	ऽ	ऽ				
x					२				०						

अन्तरा

												धनी	सां	धध	धग मऽ
												ताऽ	ऽ	नोंऽ	ऽत नऽ
															३
नी ध	–	–	ध	नी	सांगं	ऽ	मं	रें	–	सां	रें	सां	नी	–	सां
नों	ऽ	ऽ	त	न	तुंऽ	ऽ	द्रे	दा	ऽ	नी	त	न	तुं	ऽ	द्रे
x				२				०				३			
ध	–	म	मध	ग	रे ग	–	म	रे	–	सा	ध	नी	सा	–	रे
दा	ऽ	नी	तऽ	न	तुं	ऽ	द्रे	दा	ऽ	नी	त	न	दे	ऽ	रे
x				२				०				३			
ग	–	म	ग	म	मनी	ध	नी	धनी	सां	ऽ	ध	नी	सांगं	–	मं
ना	ऽ	ऽ	त	न	देऽ	ऽ	रे	नाऽ	ऽ	ऽ	त	न	देऽ	ऽ	रे
x				२				०				३			
रें	–	सां	रेंसां	ध	–	म	धम	रे	–	सा					
ना	ऽ	ऽ	तऽ	दा	ऽ	नी	तऽ	दा	ऽ	नी					
x				२				०							

राग – भैरवी

त्रिताल

स्थाई

| प म ग रे | सा ग – म

| ध – प – | म ग रे सा | – ध – नी | सा रे ग –

| सा रे सा, म | ग, प म, ध | प, नी ध, सां | नी, रें सां –

| नीध पम नी – | धप मग रेसा नीसा |

अन्तरा

| ग म ध ग | – म प ध

| नी सां – रें | सां नी सां – | प गं रें गं | सां रें सां नीध

| पम गरें सा, म | ग, प म, ध | प, नीध, सां | नी रें सां –

| नीध पमनी – | धप मग रेसा नीसा |

राग – कोमल ऋषभ आसावरी — त्रिताल

स्थाई: जोगिन के भेस धरे,
रघुवर चले विपिन,
पूरन करन तात वचन को॥

अन्तरा: ऐसो महात्यागी राज कुँवर,
सब सुख त्यज दियो भोगन को,
और चले सलदलन
दीनन दुख दूर करन को॥

स्थाई

			– म प ध
			ऽ जो गि न
			३
नी – ध –	म – ग –	रे ग रे सा	सा ग रे सा
के ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	भे ऽ स ऽ	ऽ च ले ऽ
x	२	०	३
रे नी ध ध	ध ध सा सा	सा सा सा रे	म म प प
र घु व र	च ले ऽ बि	पि न पू ऽ	र न क र
x	२	०	३
प प म ध	प नी ध म	ग – रे –	सा म प ध
न ता ऽ त	ऽ व च न	को ऽ ऽ ऽ	ऽ जो गि न
x	२	०	३

अन्तरा

, धम ऽम पध
, रेऽ ऽसे ऽम
३

सां	-	सां	-	सां	सां	-	सां	रें	नी	रेंसां	-	(ग) रें	रें	सां	सां
हा	ऽ	व्या	ऽ	गी	श	ऽ	ज	कुं	व	रऽ	ऽ	स	ब	सु	स
x				2				0				3			

रें	नी	ध	म	-	मप	-ध	म	ग	-	रे	-	सा	(ग) रे	-	सा
व्य	ज	दि	यो	ऽ	भोऽ	ऽग	न	को	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	औ	ऽ	र
x				2				0				3			

रे	नी	ध	-	ध	-ध	सासा	सा	सा	सा	सा	रे	म	म	प	प
च	ले	ऽ	ऽ	सऽ	ऽले	ऽऽ	द	ल	न	दी	ऽ	न	न	दु	स
x				2				0				3			

प	ध	म	ध	प	नी	ध	म	ग	-	रे	-	सा	
ऽ	द्र	ऽ	र	ऽ	क	र	न	को	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
x				2				0				3	

राग – भटियार

द्रुत एकताल

स्थाई : माता महाकाली, तू दया दानी
जगजानी वरदानी ॥
अंतरा : हाथ खड्ग त्रिशूल विराजे,
गले सोहे मुंडमाल
असुर संहारिनी, जगजानी वरदानी ॥

स्थाई

सा	–	ध	–	म	म	प	ग	प	ग	रे	सा
मा	ऽ	ता	ऽ	म	हा	का	ऽ	ऽ	ली	ऽ	ऽ
x		0		2		0		3		4	

म	–	–	म	म	म	(नी) ध	–	प	–	म	–
तू	ऽ	ऽ	द	या	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ	नी	ऽ
x		0		2		0		3		4	

(ध) म	(ध) म	ध	ध	सां	सां	धनी	सांरें	सांनी	धप	मग	रेसा
ज	ग	जा	नी	व	र	दाऽ	ऽऽ	ऽऽ	नीऽ	ऽऽ	ऽऽ
x		0		2		0		3		4	

अन्तरा

म	–	ध	सां	–	सां	सां	सां	सांनी	रें	सां	सां
हा	ऽ	थ	ख	ड्	ग	त्रि	शू	लऽ	वि	रा	जे
x		0		2		0		3		4	

(नी) ध	(नी) ध	धनी	रें	रें	–	नी	ध	नी	ध	–	प
ग	ले	सोऽ	ऽ	हे	ऽ	मुं	ऽ	ड	मा	ऽ	ल
x		0		2		0		3		4	

सा	ध	ध	प	ग	प	प	ग	प	ग	रे	सा
अ	सु	र	सं	ऽ	ऽ	हा	ऽ	ऽ	रि	नी	ऽ
x		0		2		0		3		4	

ध मे	ध मे	ध	ध	सां	सां	धनी	सांरें	संनी	धप	मग	रेसा
ज	ग	जा	नी	व	र	दाऽ	ऽऽ	ऽऽ	नीऽ	ऽऽ	ऽऽ
x		0		2		0		3		4	

राग – भटियार

त्रिताल

स्थाई

रेंरें | नीरें नीनी धनी धध
तऽ | दाऽ रेऽ दाऽ नीऽ
2

प	–	म	–	–	प	ग	रे	सा	–	–	सा
दीं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	त	दा	रें	दीं	ऽ	ऽ	त
x				2				0			

म	म	–	पध	ध	प	–	प	–	धनी	नी	ध
न	ता	ऽ	रेऽ	दा	ऽ	नी	ता	ऽ	रेऽ	दा	ऽ
3				x				2			

ध	सां	–	नी	रें	–	सा	सा	ध	प	–	प
नी	ता	ऽ	रे	दा	ऽ	नी	त	दा	ऽ	नी	ता
0				3				x			

ध	–	प	प	नी	–	ध	ध	सां	–	रें
दा	ऽ	नी	त	दा	ऽ	नी	त	दा	ऽ	नी
x				2				0		

अन्तरा

मं | ध ध मं मं
री | त न ता रें
3

ध	सां	–	–	सां	–	सां	नी	रें	सां	–	नी
दा	ऽ	ऽ	ऽ	नी	ऽ	त	न	दीं	ऽ	ऽ	ता
x				2				0			

सांरें	रें	नी	नी	म	पध	ध	प	प	प	ग	रे
रेऽ	दा	ऽ	नी	ता	रेऽ	दा	ऽ	नी	ता	रे	दा
3				x				2			

–	सा	–	सा	म	म	–	पध	ध	–	प	सां
ऽ	नी	ऽ	त	न	ता	ऽ	रेऽ	दा	ऽ	नी	ता
0				3				x			

नी	रें	–	रें	नीनी	धध	पप	
रे	दा	ऽ	नी	दींऽ	ऽऽ	ऽऽ	
2				0			

राग – जोगिया

त्रिताल

स्थाई: हरि हर का भेद न पायो,
बीज रूप से अंकुर उपज्यो,
अंकुर बिरह बनायो,
सिरजनहार फूल बन बिहसे,
तापुनि बीज बनायो॥

अन्तरा: चौरासी के बाँध घुंगरवा,
अंगन नाच नचायो,
उलझत सुलझत उमर बीत गई
तबहूँ पार न पायो॥

स्थाई

म	म	प	नी	ध	–	म	–	रे	सा	रे	–	–	–	सा	–
ह	रि	ह	र	का	ऽ	भे	ऽ	द	न	पा	ऽ	ऽ	ऽ	यो	ऽ
0						3				x				2	

सा	–	रे	म	–	म	म	–	–	म	मप	म	पध	नीनी	ध	प
ऽ	बी	ज	रू	ऽ	प	से	ऽ	ऽ	अं	ऽकु	र	उऽ	पऽ	ज्यो	ऽ
0				3				x				2			

ध	–	ध	ध	प	ध	म	–	प	ध	पध	नीसां	–	–	नीध	प
अं	ऽ	कु	र	बि	र	ह	ब	ना	ऽ	योऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ
0				3				x				2			

–	धध	–	धध	प	–	ध	मप	नी	ध	म	म	रे	रे	सा	–
ऽ	सिर	ऽ	जन	हा	ऽ	र	फूऽ	ऽ	ल	ब	न	बि	ह	से	ऽ
0				3				x				2			

–	सा	रेम	म	प	–	प	प	नी	ध	म	म	रे	रे	सा	–
ऽ	ता	ऽपु	नि	बी	ऽ	ज	ब	ऽ	ल	ब	न	बि	ह	से	ऽ
0				3				x				2			

पध म नी -	ध - म म
नाऽ ऽ यो ऽ	ऽ ऽ ह रि
x	2

अन्तरा

म - प ध	सां - सां -
चौ ऽ रा ऽ	सी ऽ के ऽ
0	3

रें - रें रें	गं रें सां -	- सां - सां सां	नी सां नी ध
बा ऽ ध घुं	ग र वा ऽ	ऽ अंऽ ऽग न	ना ऽ च न
x	2	0	3

पध म पध नीसां	- - नीध प	- धध -ध ध-	प ध म म
चाऽ ऽ योऽ ऽऽ	ऽ ऽ ऽऽ ऽ	ऽ उल ऽझ तऽ	सु ल झ त
x	2	0	3

प नी ध म	- म रे सा	सा रे म -	प - प प
उ म र बी	ऽ त ग ई	त ब हँ ऽ	पा ऽ र न
x	2	0	3

पध म नी -	ध - म म
पाऽ ऽ यो ऽ	ऽ ऽ ह रि
x	2

राग – देशकार त्रिताल

स्थाई

सा | रे गप गप धप
त | न देऽ ऽरे ऽऽ
3

सां
| ध – – – | प ग गप धप | ग ग सा सा | रे गप गप धप
| ना ऽ ऽ ऽ | रे ऽ द्रेऽ तेऽ | नो ऽ ऽ त | न देऽ ऽरे ऽऽ
x 2 0 3

सां ध
| ध – – सां | ध ध प प | – गप -प सांध | सां – प प
| ना ऽ ऽ त | दा रे दा नी | ऽ उद् ऽनि ऽत | दीं ऽ त न
x 2 0 3

प
| पध धसांध ग ग | गरेसा रेगप धसांरें गंगंरें | सांसांध पपगा रेसा
| दींऽ ऽऽऽ त न | दींऽऽ ऽऽऽ ऽऽऽ ऽऽऽ | ऽऽऽ ऽऽऽ ऽऽ
x 2 0

अंतरा

, गग -ग -ग | प – सां ध
, उद् ऽनि ऽत | दीं ऽ त न
0 3

| सां – सां सां | सां रें सां – | सांरें गंरें -रें पध | सांध -ध रेग पग
| दीं ऽ त न | दे रे ना ऽ | तऽ ऽद्य ऽनी तऽ | ऽदा ऽनी तऽ ऽदा
x 2 0 3

| ऽग -सारेसारे गरेगप | गपधप धसांधसां रेसांरेंगं गंरेंसांसां | धपप गरे सा
| ऽनी -दींऽऽऽ ऽऽऽऽ | ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ | ऽऽऽ ऽऽ ऽ
x 2 0 3

राग – गुर्जरी-तोड़ी

आड़ाचौताल

स्थाई

मं ग	मं ध	ध ध	मं ध	नी ध	रे ग	रे सा
त न	न दी	म त	न न	त न	त न	दे रे
x	2	0	3	0	4	5

सा रे	ग ग	ग मं	ध ध	ध गं	गं रें नी	– नी
ता रे	दा नी	ता रे	दा नी	त दा	रे दा	ऽ नी
x	2	0	3	0	4	5

नी ध –	ध मं ग	– रेसा	सारे ग	गमं ध	धनी रें	गंरें संनी
दा ऽ	नी दा	ऽ नीऽ				
x	2	0	3	0	4	5

धमं गंरे	सानी सगं	रेंसं नीध	मंग रेसा	नीसा गंरें	सांनी धमं	गंरे सा–
x	2	0	3	0	4	5

अन्तरा

ग ग	मं –	ध ध	सां –	सां रें	सां रें	सां सां
ना हिर	दे ऽ	तुं द्रे	दे ऽ	हिर हिर	त न	दे रे
x	2	0	3	0	4	5

ध गं	– रें	सां सां	नीसां रेंसां	ध –	मंध नीध	ग –
य ला	ऽ य	लो म	युऽ लऽ	लो म	युऽ लऽ	लो म
x	2	0	3	0	4	5

ध ध	मं ग	रे सा	सारे ग	स्थाई जैसे गाना
त न	दे रे	दा नी		
x	2	0	3	

राग – भूपाल-तोड़ी

वि. तीनताल

स्थाई: पार करो मोरी नैया,
तुम बिन कौन तारनहार ॥
अंतरा: दीनन दुःख हरन,
संत जन के मन रंजन,
तुम सबके पालन करतार ॥

स्थाई

,रेगरे ,साध
पाऽऽ ऽरक

सा - -ध -	धरे - - सारेगरे	गसा-रेग -रेग-रे	-सारेगप प गगपध
रो ऽ ऽमो ऽ	शे ऽ ऽ नैऽऽऽ	ऽऽऽ ऽया ऽ तुमऽऽ	ऽ बिऽऽऽ न ऽकौऽऽ
x	2	0	3

ध - पध सां	धध सांसां पधसारेंगंरें -	गंरेंसां ध गपधसां प
न ऽ ताऽ ऽ	ऽर ऽन हाऽऽऽऽ ऽ	ऽऽऽ ऽ ऽऽऽऽ ऽ
x	2	0

धधपग रेगरेसा
ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ
2

अन्तरा

, गगपधसां सांसां धसां	सां रेंसां सांरें रें	पधसांरेंगंरें रेंगंरें सां ध
ऽ हीऽऽऽऽ नन दुऽ	ख हऽ रऽ न	संऽऽऽऽत जनऽ के ऽ
x	2	0

| | | |

राग – भूपाल-तोड़ी त्रिताल

स्थाई : तुम बिन कौन सहाय
या जग में दूसरो न कोई ॥
अंतरा : जगत उधारन प्रभू तुम
करूणा के सागर दयाघन ॥

स्थाई

सा	- रे ग प
तु	ऽ म बि न

सा											
ध	-	-	-	प	ग	रे	ग	रे	-	सा	ध	-	सा	-	रे
कौ	ऽ	ऽ	ऽ	न	ऽ	ऽ	स	हा	ऽ	य	या	ऽ	ज	ऽ	ग
x				2				0				3			

ग	-	-	सा	रे	गप	धसां	रेंसां	पध	फ़रे	गरे					
में	ऽ	ऽ	दू	स	रोऽ	ऽऽ	ऽन	को	ऽई	ऽऽ					
x				2				0							

अन्तरा

सां	
ध	- ध ध ध
ज	ऽ ग त उ
	3

सां	-	सां	सां	-	ध	पध	सांरेंगं	रें	-	सां	प	ध	सांरें	गं	रें
धा	ऽ	र	न	ऽ	प्र	भूऽ	ऽऽऽ	तु	ऽ	म	क	रू	णाऽ	ऽ	के
x				2				0				3			

गं	-	रें	सां	ध	पध	फ़रे	गरे	रे	-	सा	
सा	ऽ	ग	र	ऽ	दऽ	ध्या	ऽऽ	घ	ऽ	न	
x				2				0			

राग – भूपाल-तोड़ी त्रिताल

स्थाई

गरे	सारे गप धसां रेंगं	रें- -सां -- रे	ग रे - सा
देऽ	रेऽ नाऽ देऽ रेऽ	नाऽ ऽदीं ऽऽ त	न दीं ऽ त
	2	0	3

रे - - गरे	सारे गप धसां धप	धसां -ध प- रे	ग रे - सा
दीं ऽ ऽ देऽ	रेऽ नाऽ देऽ रेऽ	नाऽ ऽदीं ऽऽ त	न दीं ऽ त
x	2	0	3

सा - - सा	रे ग - रे	ग प - ग	प ध पध पग
दीं ऽ ऽ उ	दा नी ऽ उ	दा नी ऽ उ	दा नी तऽ ऽन
x	2	0	3

पग रेग रेसा रेसा	रेग रेग पग पध	ध सां - ध प रे	ग रे - सा
ऽऽ देऽ ऽरे ऽऽ	नाऽ ऽदे ऽऽ रेऽ	ना ऽ दीं त	न दीं ऽ त
x	2	0	3

अन्तरा

ध	प -रे - ग	- प- - ध	
त	न ऽतुं ऽ द्रे	ऽ तऽ ऽ द्रे	
	0	3	

ध सां - - ध	सां रें गं रेंगं	रें - सां रेंसां	ध - ध धप
दा ऽ ऽ त	दि य न तऽ	दा ऽ रे तऽ	दा ऽ रे तऽ
x	2	0	3

रे - रे सा	रे ग - रे	ग प - ग	प ध पध पग
दा ऽ रे उ	दा नीं ऽ उ	दा नी ऽ उ	दा नी तऽ ऽन
x	2	0	3

पग,	रेग	रेसा	रेसा,	रेग	रेग	पग,	पध	ध सां	-	ध प	रे	ग	रे	-	सा
ऽऽ	देऽ	ऽरे	ऽऽ	नाऽ	ऽदे	ऽऽ	रेऽ	ना	ऽ	दीं	त	न	दीं	ऽ	त
x				2				0				3			

अपरान्ह व सायं गेय राग

राग – शुद्धसारंग

वि. एकताल

स्थाई : तपन लागी ये धरा,
चहुँ दिस विकल भये सब लोगवा ॥
अन्तरा : तरपत है जल बिन तनवा,
पिया बिना मनवा ॥

स्थाई

म रेमे-प
तऽपऽन

म रे	रेनी नी-	सा- नीसा रे	मे-पमेप ममरेसा
ला गी	येऽ धऽ	राऽ चहुदिऽ	सविकल भऽऽऽ
x	0	2	0

रेमेपनीसांरेंनीसां नी-धप	मेपधमेप पमरेम
ऽऽऽऽऽऽऽऽ येसऽब	लोऽऽगऽवाऽ
3	4

अन्तरा

नी
पपधऽनी
तरपऽत

सां सांरेंसांसां	पनीसांरेंरेंरें सांरेंसांसांनीधप	पधपपरेमरे रेममरेसारेमेपनी
है ऽऽऽऽ	जऽऽऽलबिन तऽऽऽऽनवाऽ	ऽऽऽऽऽ पिऽऽऽयाऽऽऽऽऽ
x	0	2

सांरेंमंरेंसांरेंसांसां नी-धप	मे-प- रेमेपनी	धपप मरे नीसा- रेमे-प
ऽऽऽऽबिऽनऽ तऽऽऽ	नऽऽऽ वाऽऽऽ	ऽऽ ऽऽ तऽपऽन
0	3	4

राग – शुद्धसारंग

मध्यलय त्रिताल

स्थाई : आओ रे आओ कारे बदरा
जिया मोरा अत ही अकुलावे ॥
अन्तरा: बाट तकत तोरी सब नर नारी
तुम बरसो हम देंगी तारी ॥

स्थाई

												प	रे	म	नी सा
												आ	वो	रे	आ वो
													३		
रे															
मं	-	-	-	प	-	पध	मंप	रेम	-	रे	रे	मं	प	संरें	सांसां
का	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	बऽ	दऽ	राऽ	ऽ	ऽ	जि	या	मो	राऽ	ऽऽ
x				२				०				३			
नी	नोध	प	मं	प	नोध	पप	-	रेम	-	रे					
अ	तऽ	ही	अ	कु	लाऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	वे					
x				२				०							

अन्तरा

												रे	मं	प	नी
												बा	ऽ	ट	त
												०			
												सां	सां	सां	सां
												क	त	तो	री
												३			
नी	सां	रें	मं	रें		संरें	सांसां	नीधप	मीसां	रेंमं	पं-	रें	मं	संरें	नीसां
स	ब	न	र			नाऽ	ऽऽ	रीऽऽ	तु	म	बऽ	रऽ	सो	ऽ	हऽ	मऽ
x						२			०				३			
नी	-	प	-			मंप	नीमं	-	प		म	-	रे		
दे	ऽ	गी	ऽ			ताऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ		री	ऽ	ऽ		
x						२					०				

राग – मधमाद-सारंग

स्थाई (तीनताल)

म	– म प सां
रे	ऽ न दे रे
ता	
३	

प															
नी	–	प	–	–	–	मप	नीप	म	–	रे	नी	सा	रे	प	रे
ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	दींऽ	ऽऽ	तों	ऽ	ऽ	दे	रे	त	दा	ऽ
x				२				०				३			

म	–	म	रे	म	प	सां	प	नी	–	नी	प	नी	सां	रेंमं	संमं
ऽ	ऽ	नी	दे	रे	त	दा	ऽ	ऽ	ऽ	नी	दे	रे	त	दाऽ	ऽऽ
x				२				०				३			

रें	–	रें	नीरें	सांसां	- सां	पसां	नीनी	-	प
ऽ	ऽ	नी	दाऽ	ऽऽ	ऽ नी	दाऽ	ऽऽ	ऽ नी	
x				२			०		

अन्तरा (एकताल)

म											
रे	रे	रे	म	प	प	नी	प	नी	सां	सां	सां
दे	रे	ना	दे	रे	ना	दीं	ऽ	त	न	न	न
x		०		२		०		३		४	

नी	सां	रें	मं	रें	–	सां	–	नी	सां	नी	प
नि	त	ता	रे	दा	ऽ	नी	ऽ	नि	त	ता	रे
x		०		२		०		३		४	

म	–	रे	–	रे	–	रे	रें	–	रें	रे	–
दा	ऽ	नी	ऽ	ता	ऽ	न	ता	ऽ	न	ता	ऽ
x		०		२		०		३		४	

रे	सां	–	सां	नी	–	प	मरे	–	म	प	सां
न	ता	ऽ	न	ता	ऽ	न	ता	ऽ	न	दे	रे
x		०		२		०		३		४	

राग – भीम

वि. एकताल

स्थाई : दर्शन देहो महादेव शंकर,
उमरू धर त्रिशूल नाग ॥
अंतरा : हिमनग वास करत निसदिन,
संग उमा गणेश और शिवगण ॥

स्थाई

| ----पसांनीसां-ध-म |
| दऽरऽऽशऽन |
| ४ |

प मप	प ---पम	ग म	रे -	सा --सानी	साग म
दे ऽऽ	हो ऽऽऽमऽ	हा ऽ	दे ऽ	व ऽऽशंऽ	कऽ र
x	0	2	0	3	४

मपनी-- -	पसां -	नीध प	पनीसांगं -	रेंसां रेसांनीसांरेसांनीध
डऽमऽऽ ऽ	रूऽ ऽ	धऽ र	त्रिऽऽऽ ऽ	शूल नाऽऽऽऽऽऽऽ
x	0	2	0	3

पमप-पसांनीसां
गऽऽऽदेऽरऽ
४

अन्तरा

पधपमग--- मम
हिऽमऽनऽऽऽ ऽग
४

पनी-- --पनी	सां -नी	गंरें सां	रेंसांनी- -	पसांनीसां-- -
वाऽऽऽ ऽऽसऽ	र ऽऽ	ऽऽ त	नीऽसऽऽ ऽ	दिऽऽऽऽऽ ऽ
x	0	2	0	3

नीध प	पधपमग--- मम	रेसा ---सा	नी -नी
ऽऽ न	सं ऽऽऽ ग ऽऽऽ ऽऽ	माऽ ऽऽऽ ग	णे ऽश
४	x	०	२

पनीसांगं -	रेंसां रेंसानीसांरेंसांनीध	पमप-
औऽऽऽ ऽ	रऽ शिऽवऽ ग ऽऽऽ	णऽऽऽ
०	३	४

राग – भीमपलासी त्रिताल

स्थाई

| - रे नी सा

| म - - - | - - म प | ग - - म | - प नी सां

| गं - रें सां | नी ध प म | पनी पम गम - |

अन्तरा

| ग म प नी | - नी - नी

| प नी सां - | - नी सां - | नी सा म ग | रे सा नी सा

| म - म ग | प - प म | नी - नी प | सां - सां नी

| गं - रें सां | नी ध प म | पनी पम गम - |

राग – मारवा

त्रिताल

स्थाई

								ध							
								मंध		मं	ग	रे	सा	-	नी-
								तदि		य	न	दे	रे	ऽ	तऽ
									0						3

ध															
नी	-	मं	ध	ध	-	धमं	ध	मं	ग	रे	गरे	ग	रे	नी	ध
ता	ऽ	ऽ	ऽ	नऽ		तन	न	दे	रे	ना	तन	न	दे	रे	ना
x				2				0				3			

	नी		मं		नी		
ध	रें	ग	ध	रें	रें	-	
त	न	त	दाऽ	ऽ	नी	ऽ	
x				2			

अन्तरा

,	सांनी	रें	-नी	धमं	गरे	-ग	-मं								
,	तन	न	ऽत	नदे	रेना	ऽत	ऽन								
0								3							

धनी	सां	सां	सां	नी	रें	सां	-	ध	नी	रें	गं	मं	गं	रें	नीध
दींऽ	ऽ	त	न	दे	रे	ना	ऽ	त	दि	य	न	त	न	दे	रेऽ
x				2				0				3			

				ध											
-	मं	धनी	मं	नी	ध	मं	ग	रे	रे	गमं	रे	गमं	ग	रे	नीध
ऽ	त	नऽ	त	दि	य	न	दे	रे	त	नऽ	त	दिऽ	य	न	देरे
x				2				0				3			

	नी		मं		नी		
ध	रें	ग	ध	रें	रें	-	
त	न	त	दाऽ	ऽ	नी	ऽ	
x				2			

राग – मारवा

द्रुत एकताल

स्थाई: चलो हटो जावो मुरारी,
ना करो मोसे रार तुम गिरिधारी ॥

अंतरा: हूँ तो जात दधि बेचन,
बिन्दरावन बहुत देर भयो,
ना करो मोसे रार तुम गिरिधारी ॥

स्थाई

ध	ध	मं	ग	रे	सा	सा	सानी	रे	–	सा	–
च	लो	ह	टो	जा	वो	मु	रा ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ
x		0		2		0		3		4	

नी	–	–	रे	–	–	ग	–	–	ध मं	–	नी ध
ना	ऽ	ऽ	क	ऽ	ऽ	रो	ऽ	ऽ	मो	ऽ	से
x		0		2		0		3		4	

–	नी	रें	नी	ध	ध	गमं	धध	मंध	मंग	रेसा	नीसा
ऽ	रा	ऽ	र	तु	म	गि ऽ	रि ऽ	धा ऽ	ऽऽ	ऽऽ	री ऽ
x		0		2		0		3		4	

अन्तरा

मं	–	ध	सां	–	सां	सां	सां	सांनी	रें	सां	सां
हूँ	ऽ	तो	जा	ऽ	त	द	धि	बे ऽ	ऽ	च	न
x		0		2		0		3		4	

नी	नी	रें	गं	रें	सां	सां	सांनी	रेंसां	ध	–	ध
बि	न्द	रा	ऽ	व	न	ब	हु ऽ	त ऽ	दे	ऽ	र
x		0		2		0		3		4	

रेंनी	रें	नी	ध	मं	ग	मंग	मं	ग	रे	सा	सा
भ्रु ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
x		0		2		0		3		4	

नी	–	–	रे	–	–	ग	–	–	धमं	–	नीध
ना	ऽ	ऽ	क	ऽ	ऽ	रो	ऽ	ऽ	मो	ऽ	से
x		0		2		0		3		4	

–	नी	रें	नी	ध	ध	गमं	धध	मंध	मंग	रेसा	नीसा
ऽ	रा	ऽ	र	तु	म	गिऽ	रिऽ	धाऽ	ऽऽ	ऽऽ	रीऽ
x		0		2		0		3		4	

राग – पूरियाधनाश्री

वि. एकताल

स्थाई: अजहूँ न आए सखि री, श्याम सलोने
सुख नहि माने जियरा ॥
अन्तरा: निसदिन तरपत है, उन बिन आली
मोरा कैसे कर हुलसे जियरा ॥

स्थाई

सामगप मेध- मग, रेसासा |
अऽ ऽऽ ऽऽऽजऽ हूँऽ न

रेसासा
नी--- रेग-- | मे मे
ग रे-ग प-प | ध
मे-धमे धमेधनीरेंनीध |
आऽऽऽ येऽ ऽऽ | सऽऽखि रीऽऽ | खाऽमऽ सऽऽऽलोऽऽ |
x 0 2

प-पधमेप मेगमेरेग | मे-ग मे ध मे | मेग मे गगमेधनीसांरेंसां |
नेऽसुऽऽऽ ऽऽखऽ | नऽहिमाऽ ऽऽऽऽऽऽऽऽऽनेऽ |
0 3

धनीनीधनीरेंनीधप पग-मेरेग सामगपमेध-मग,रेसासा |
जिऽऽऽऽऽयराऽ ऽऽऽऽऽऽ अऽऽऽऽऽजऽहूँऽन |
४

अन्तरा

ध ध
-मग, मेध |
ऽ निसदिन

धनीसांसांसां नीरें-सां- | धनीरेंगं रेंमेंगंरेंगं-रेंसां | धनीनीधनीरेंनीधप |
तऽऽऽरप तऽऽहैऽ | उनबिन ऽऽऽऽऽऽऽऽ | आऽऽऽऽऽलीऽ |
x 0 2

मपधमप,मगमरेग	म-गधम मगगमधनीसांरें	सांरेंसां-धनीधनीरेंनीधप
मोऽऽऽऽराऽऽऽऽ	कैऽऽसेऽ कऽऽऽऽऽऽऽ	ऽऽऽऽ हुऽऽऽऽलऽऽसे
	०	२

पधपपमगमरे	सामगपमध-मगरेसासा
जिऽयऽऽऽऽरा	अऽऽऽऽऽऽऽजऽहूऽन
४	

राग – मुलतानी

त्रिताल

स्थाई : पकरि मोरी बैयाँ करत झकझोरी,
कहत मैको राधा श्याम खेलो होरी ॥
अंतरा : गैयाँ चरावन जात हूँ मधुवन,
बृजबाला सर मगरोकत, मुकुट हरत,
लकुटि धरत, कमरि छिनत देखो री माई,
ऐसो करत बरजोरी ॥

स्थाई

								ध	प	प	ग म
								प	क	रि	मो री
									3		
प	-	म प	म	ग	म	ग	रे	-	सा	रे	नी सा ग म
बै	ऽ	याँ क	र	त	झ	क	झो	ऽ	री	क	ह त मै को
x			2				0				3
प	-	म -	प	-	प	नी सां	नी ध	-	प		
रा	ऽ	धा, ऽ	श्या	ऽ	म	खे लो	हो	ऽ	री		
x				2			0				

अन्तरा

								प	-	ग म	प नी सां सां
								गै	ऽ	याँ च	रा ऽ व न
								0			3
नी	-	सांगं रें	सांरें	नीसां	ध प		-	-	म ग	म - प	- नी
जा	ऽ	त ऽ हूँ	म ऽ	धु ऽ	ब न		ऽ	ऽ	बृ ज	बा ला	ऽ रा
x			2				0			3	

ध	प	मं	प	ग	-	रे	सा	-	नीसा	-मं	ग	मं	प	नी	ध
ऽ	र	म	ग	रो	ऽ	क	त	ऽ	मुकु	ऽट	ह	र	त	ल	कु
x				2				0				3			

प	धप	ग	मं	प	नी	सां	ग	मं	प	नी	सा	ग	रे	-	सा
टि	धऽ	र	त	क	म	रि	द्धि	न	त	दे	खो	री	मा	ऽ	ई
x				2				0				3			

ग	मं	प	नी	सां	-	सां	नी	ध	- प
ऐ	सो	क	र	त	ऽ	ब	र	जो	ऽरी
x				2				0	

राग – मुलतानी

मध्यलय त्रिताल

स्थाई

नी़ नी़ | सा मं ग रे | सा मं ग – मं
त न | दे रे त दा | नी दीं ऽ त
0 | 3

| प – मं ध प | ग – – ग | मं प नी नी | सां – सां गंरें
| नों ऽ ऽ त | ना ऽ ऽ त | न तुं ऽ द्रे | दा ऽ नी तऽ
x | 2 | 0 | 3

| –सां –– नीध–प | –– मंग रेसा –– | नी़ नी़
| ऽना ऽऽ तऽऽना | ऽऽ तऽ ऽना ऽऽ | दे रे
x | 2 | 0

अन्तरा

धप | ग– –मं पप नीनी
तऽ | नऽ ऽतुं ऽऽ द्रेऽ
3

| सां – – सां | –फनी नीसां गं | रें – सां नी | सां गंमं पं गं
| दा ऽ ऽ नी | ऽ तऽ ऽदि ऽ | य ऽ न त | न देऽ ऽ रे
x | 2 | 0 | 3

| – रें सां सां मं | प नीसां रेंनी सां | ध – प नी़ | सा मंप धमं प
| ऽ ना ऽ त | न देऽ ऽऽ ऽ | रे ऽ ना त | न देऽ ऽऽ ऽ
x | 2 | 0 | 3

| मं ग – रे सा – | मं – – –ग | नी – – –ध | गं – रें सां
| रे ऽ ना ऽ | त ऽ ऽ ना | त ऽ ऽ ना | त ऽ ना ऽ
x | 2 | 0 | 3

रेंनी सांध -- प	धमं पग - नी
तऽ ऽना ऽऽ ऽ	तऽ ऽना ऽ ऽ
x	२

राग – मुलतानी त्रिताल

स्थाई

प | – प ग॒ मे
ता | ऽ न दे रे
३

| प नी – – | – – नी सां | ध॒ – प नी | ध॒ प मे प
| ना ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ दीं ऽ | तों ऽ ऽ त | दा रे दा नी
x 2 0 3

| मे ग॒ ग॒ रे॒ नी | सा नी सा ग॒ | मे प ध॒
| त दा रे दा | नी त दा रे | दा ऽ नी
x 2 0

अन्तरा

ग॒ ग॒ मे मे | प प नी नी
ना दिर दिर दिर | तुं दिर दिर दिर
३

| सां सां सां गं | रें॒ रें॒ सां सां | नी सां नी ध॒ | प प मे ग॒ ग॒
| दिर दिर त न | दे रे ना ऽ | नक धिर किट तक | धिर किट थुं धिर
x 2 0 3

| ग॒ रे॒ सा नी | – सा ग॒ – | मे – – मे | – मे प –
| किट तक धा क्डां | ऽ धा क्डां ऽ | धा ऽ ऽ क्डां | ऽ धा क्डां ऽ
x 2 0 3

| नी – – नी | – नी सां गं | रें॒ – सां
| धा ऽ ऽ क्डां | ऽ धा क्डां ऽ | धा ऽ ऽ
x 2 0

राग – मधुवंती

त्रिताल

स्थाई

			ग| – मं पनी सां
			दीं| ऽ त तऽ न
			3
ध – प –	ग – मं ग	सा रे – सा रे	नी – सा ध
दीं ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ त न	दीं ऽ ऽ त	दा ऽ नी त
×	2	0	3
मं – प रें	नी नी धध	प प मं	
दा ऽ नी दीं	ऽ दीं ऽ दीं	ऽ दीं ऽ	
×	2	0	

अन्तरा

		ग ग ग मं|	प प नी –
		दे रे ना दीं|	ऽ त दीं ऽ
		0	3
सां सां – सांगं	रें रें सां –	– – – प	– नी सां गं
नि ना ऽ तऽ	दे रे ना ऽ	ऽ ऽ ऽ ता	ऽ न दे रे
×	2	0	3
रें – सां –	नी – नी सां	ध – प ध	मं प ग –
ना ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ दीं ऽ	तीं ऽ ऽ दी	ऽ ऽ तीं ऽ
×	2	0	3
सा रे – सा –	सासा, मंगं मंमं, पप,	प सांरें नीनी सांसां,	धध, ध मंमं, पप,
ऽ ऽ ऽ ऽ	तिट, कत, गदी, गन,	धा तिट, कत, गदी,	गन, धा तिट, कत,
×	2	0	3
मंगं, गगं, रे नी	सा ध मं प	रें नी सां	
गदी, गन, धा ऽ	ऽ धा ऽ ऽ	धा ऽ ऽ	
×	2	0	

राग – धानी

विलम्बित रूपक

स्थाई: आनंद मनाओ, आज,
मोरा पिया घर आया है॥
अन्तरा: चहुँ दिशि बिजुरी चमके, अब न डरूँगी
मैं मोरा पिया घर आया है॥

स्थाई

								ग	मपनीप		
								आ	ऽनंदम		
पनीसां	सां	नीसां		नीपम	मपमप			ग-	मगसा		
मा ऽऽ	ऽ	ऽ		ओऽऽ	आऽऽऽ			जऽ	ऽऽऽ		
नीसागगसानी	प	नी		सा	नी	नीसा		म--	--ग		
मोऽऽऽऽऽरा	ऽ	पि		या	ऽ	ऽऽ		घऽ	ऽऽर		
प	प	मपनीप		पनी	पनीसांगं			नीसांनीप			
आ	या	ऽऽऽऽ		ऽऽ	हैऽऽऽ			ऽऽऽऽ			

अन्तरा

ग	मपनीसांनी
ऽच	हुँदिऽशि

सां	सां	सां	नी-	सांगं	गंनीसां	-सां	
बि	जु	री	-चऽ	मऽ	केऽऽ	ऽऽ	
0			2		3		

नीसांगं	गसांनी	पनीसांनीप	मपमप	ग-	मग-	सा	
अऽऽ	बऽऽ	नऽऽऽऽऽ	रूँऽऽऽ	ऽगी	ऽऽमै	ऽ	
0			2		3		

नीसागगसानी	प़	नी	सा	नी	नीसा	म--	--ग
मोऽऽऽऽराऽ	ऽ	पि	या	ऽ	-ऽ	घऽऽ	ऽऽर
0			2			3	

प	प	मपनीप	पनी	पनीसांगं	नीसांनीप
आ	या	ऽऽऽऽ	ऽऽ	हैऽऽऽ	ऽऽऽऽ
0			2		3

राग – धानी

त्रिताल

स्थाई : अब घर आयो मोरा श्याम
बहुत दिन बीते, नहि आवे ॥
अंतरा : तुम बिन कछु ना मोहे सुहावे
विकल मन तरप रह्यो जायो ॥

स्थाई

												गम	पम	पनी	पसां नीसां
												अऽ	ऽब	ऽऽ	धऽ रऽ
													३		
नी	-	प	प	प	ग-	-म	-	ग	-	सा	नी	नी	नी	सांग	सानी
आ	ऽ	ऽ	यो	ऽ	मोऽ	ऽरा	ऽ	श्या	ऽ	म	ब	हु	त	दिऽ	नऽ
x				२				०				३			
सा	-	सा	गम	पम	पनी	पनी	सांनी	पम	गम	गसा					
बी	ऽ	ते	नऽ	ऽहो	ऽऽ	आऽ	ऽऽ	वेऽ	ऽऽ	ऽऽ					
x				२				०							

अन्तरा

												ग	म	नीप	पसां नीसां
												तु	म	बिऽ	ऽन ऽऽ
													३		
सां-	-सां	--	सां-	-	नी	सां	गं	नीसां	-नी	प	पनी	सां	नी	प	म
कऽ	ऽछु	ऽऽ	नाऽ	ऽ	मो	हे	सु	हाऽ	ऽवे	ऽ	विऽ	ऽ	क	ल	म
x				२				०				३			
प	गम	पम	पनी	पनी	सांनी	पम	गम	गसा	नीसा	-					
न	तऽ	ऽऽ	ऽऽ	पऽ	रऽ	ह्योऽ	जाऽ	योऽ	ऽऽ	ऽ					
x				२				०							

राग – अंबिका

वि. एकताल

स्थाई: ए मातु अंबिके, अक्षरे, त्र्यंबके,
महादेव वंदिते सर्वार्थसाधिके ॥
अंतरा: मंत्रमयी देवी, अनेक रूप नामिनी,
सकल लोक स्वामिनी ॥

स्थाई

सामंगपमंप गगरेसा
ए ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ मातुअंबि

रे सा	नीसा गमंग गमंप	प– पधमंप गं	गमंपनी नी पनीसां नीसां
के ऽ	अक्ष रे ऽ ऽ त्र्यंऽब	के ऽ महा ऽ ऽ ऽ	दे ऽ ऽ ऽ व दे ऽ ऽ दिते

पनीसांरेंनीसां धपमंग गमंपधंगं	रेसासा
स ऽ ऽ ऽ ऽ र्वा ऽ ऽ ऽ र्थ सा ऽ ऽ ऽ धि	के ऽ ऽ

अन्तरा

गमंगमंपनीसांनी
मंत्र मयी ऽ ऽ ऽ ऽ

सां सां	पनीनी पपनीसांगंरेंसां	पनीसांरेंनी सांसांधपंगं	सा गमं गमंपनीसां सां
दे वी	अनेक रूऽऽ ऽ ऽऽप	नाऽ ऽ ऽ ऽ ऽमिनीऽऽ	सकल लोऽऽऽऽ क

पनीसांरेंनी सांधपंगं गमंपनीध	पंगं रेसारेसा
स्वा ऽ ऽ ऽ मि ऽ ऽ ऽ नी ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽऽ ऽऽऽ ऽ

राग – अंबिका त्रिताल

स्थाई: जय कालिके, कालात्मिके, महामाया
त्रिविधरूपा, त्रिगुणात्मिका भुवनत्रयतारिणी ॥
अंतरा: जयति जय भवानी माता, जगदात्री, जगधात्री,
जगदंबे भवानी, भुवनत्रयतारिणी ॥

स्थाई

												मं	गं	मं	प
												ज	य	का	ऽ लि
													3		
सां	–	–	ध	–	प	मं	धप	गं	–	–	मं	गं	रे	–	सा
के	ऽ	ऽ	का	ऽ	ला	ऽ	त्मि	के	ऽ	ऽ	म	हा	मा	ऽ	या
x				2				0				3			
–	सा	गं	मं	प	–	प	गं	मं	प	नी	नी	सां	–	–	प
ऽ	त्रि	वि	ध	रू	ऽ	प	त्रि	गु	णा	ऽ	त्मि	का	ऽ	ऽ	भु
x				2				0				3			
नी	सां	गं	रेंसां	सांरें	सांनी	धप	मंप	गंमं	गंरे	सा					
व	न	त्र	यऽ	ता	ऽऽ	रिऽ	ऽऽ	णीऽ	ऽऽ	ऽ					
x				2				0							

अन्तरा

												गं	मं	प	नी नी
												ज	य	ति	ज य
													3		
सां	सां	–	सां	–	–	नी	सांगं	रें	सां	–	नी	सां	ध	–	प
भ	ऽवा	ऽ	नी	ऽ	ऽ	मा	ऽऽ	ता	ऽ	ऽ	ज	ग	दा	ऽ	त्री
x				2				0				3			

मं	प	ग	-	ग	रे	सा	रे	-	सा	-	सा	मं ग	प मं	प	ग
ज	ग	धा	ऽ	त्री	ज	ग	दं	ऽ	बे	ऽ	भ	वा	ऽ	नी	भु
x				2				0				3			

मं	प	नी	सां	सांरें	सांनी	धप	मंध	पमं	गरे	साऽ	
व	न	त्र	य	ताऽ	ऽऽ	रिऽ	ऽऽ	णीऽ	ऽऽ	ऽऽ	
x				2				0			

राग – अंबिका

आड़ाचौताल

स्थाई

ग –	म प	– सां	– धप	प ग	– रेसा	रे सा	
ता ऽ	न दीं	ऽ ता	ऽ नऽ	दीं ता	ऽ नऽ	दे रे	
x	2	0	3	0	4	5	

नी सां	ग मे	प ग	मे प	नी सां	नी सां	गं रें
उ द	नी दा	नी उ	द नी	दा नी		
x	2	0	3	0	4	5

सां नी	ध प	मे ग	मे ग	रे सा	गग गमे	-प -प
					धिरकिट तधा	ऽता ऽन
x	2	0	3	0	4	5

सां –	धध धध	-ध -प	प –	गग गग	-रे -सा	रे सा
धा ऽ	धिरकिट तधा	ऽता ऽन	धा ऽ	धिरकिट तधा	ऽता ऽन	धा ऽ
x	2	0	3	0	4	5

अन्तरा

ग मे	प नी	सां सां	नी सां	गं रें	– सां	नी सां
दे रे	ना दे	रे ना	त दा	रे ता	ऽ रे	दा नी
x	2	0	3	0	4	5

नी सां	गं गं	रें रें	सां –	नी सा	ग ग	रे रे
नि त	त न	दे रे	ना ऽ	नि त	त न	दे रे
x	2	0	3	0	4	5

नी सां	गं गं	रें रें	सां –	नी सां	नी सां	गं रें
नि त	त न	दे रे	ना ऽ	दे रे		
x	2	0	3	0	4	5

सां नी	ध प	मे ग	मे ग	रे सा	गग गमे	-प -प	
					धिरकिट तकधा	ऽता ऽन	
x	2	0	3	0	4	5	

सां -	धध धध	-ध -प	प -	गग गग	-रे -सा	रे सा	
धा ऽ	धिरकिट तकधा	ऽता ऽन	धा ऽ	धिरकिट तकधा	ऽता ऽन	धा ऽ	
x	2	0	3	0	4	5	

राग – अंबिका

आड़ाचौताल

स्थाई

ग –	मं प	– सां	– धप	प ग	– रेसा	रे सा	
ता ऽ	न दीं	ऽ ता	ऽ नऽ	दीं ता	ऽ नऽ	दे रे	
x	2	0	3	0	4	y	

ग –	मं प	– सां	– धप	प ग	– रेसा	प़ नी़	
ता ऽ	न दीं	ऽ ता	ऽ नऽ	दीं ता	ऽ नऽ	उ द	
x	2	0	3	0	4	y	

सा रे	नी़ सा	ग मं	प ध	मं प	प नी	सां रें	
नी त	न न	त न	न दे	रे ना	त न	न दे	
x	2	0	3	0	4	y	

नी सां	ध –	प पध	मं –	प –	गंगं गंमं	-प -प	
रे ना	दीं ऽ	त दींऽ	ऽ त	दीं ऽ	धिरकिट तकधा	ऽता ऽन	
x	2	0	3	0	4	y	

सां –	धध धध	-ध -प	प –	गंगं गंगं	-रे -सा	रे सा	
धा ऽ	धिरकिट तकधा	ऽता ऽन	धा ऽ	धिरकिट तकधा	ऽता ऽन	धा ऽ	
x	2	0	3	0	4	y	

अन्तरा

नी	ध प	ग -मं	-- प	नीसां नी			
दे	रे ना	दीं ऽदीं	ऽऽ दे	रेऽ ना			
	3	0	4	y			

सां –	– प	नी सां	गं -रें	-- सां	– सांरें	नी सां	
दीं ऽ	ऽ त	न न	दे ऽरे	ऽऽ ना	ऽ तऽ	दा रे	
x	2	0	3	0	4	y	

ध प	पध मं	प ग	– मं	ग रेसा	रे सा	.प नी	
दीं ऽ	तऽ दा	रे दीं	ऽ त	दा रेऽ	दीं ऽ	उ द	
x	2	0	3	0	4	5	

सा रे	नी सा	ग मं	प ध	मं प	प नी	सां रें	
नी त	न न	त न	न दे	रे ना	त न	न दे	
x	2	0	3	0	4	5	

नी सां	ध –	प पध	मं –	प –	गग गमं	-प -प	
रे ना	दीं ऽ	त दींऽ	ऽ त	दीं ऽ	धिरकिट तकधा	ऽता ऽन	
x	2	0	3	0	4	5	

सां –	धध धध	-ध -प	प –	गग गग	-रे -सा	रे सा	
धा ऽ	धिरकिट तकधा	ऽता ऽन	धा ऽ	धिरकिट तकधा	ऽता ऽन	धा ऽ	
x	2	0	3	0	4	5	

रात्रि गेय राग

राग – यमन

मध्यलय एकताल

स्थाई

नी- -ध,	प रे	गध प	रे- -सा,	- ग-,	-मं, ध
ताऽ ऽनों,	ऽ त	दाऽ रे	दाऽ ऽनी,	ऽ देऽ	ऽरे ऽ
x	0	2	0	3	4

नी- -ध,	प रे	गध प	रे- -सा,	- सा नी	ग रे मं ग
ताऽ ऽनों,	ऽ त	दाऽ रे	दाऽ ऽनी,	ऽ उ	द न
x	0	2	0	3	4

ध प मे	ग मं ग	ध मं नी ध	रें सां- नी	ध नी ध	सां नी रेंगं रें
त दा	रे उ	द न	तऽ दा	रे उ	द नऽ
x	0	2	0	3	4

अन्तरा

मं ग	ध मं नी ध
ओ	दा नी
	4

सां सां	सां सां	सां सां	ध नी -ध	मं प मं ग	ध मं नी ध
त न	न, त	न न,	दे ऽरे	ऽ ओ	दा नी
x	0	2	0	3	4

सां सां	सां सां	सां सां	ध नी रेंगं	मंपं गं रें	सां नी
त न	न, त	न न,	त दाऽ	ऽऽ रे	दा ऽ
x	0	2	0	3	4

धपप मं –	रे गमं	ध प रे	रे सा	सा नी	रे सा
नी ऽ	त दाऽ	ऽ रे	ऽ दा	नी उ	द न
x	0	2	0	3	4

ध प मे	ग मं ग	ध मं नी ध	रें सां- नी	ध नी ध	सां नी रेंगं रें
त दा	रे उ	द न	तऽ दा	रे उ	द नऽ
x	0	2	0	3	4

राग – यमन

त्रिताल

स्थाई

												नीध	पमे	गमे	धनी सां
												देऽ	रेऽ	नाऽ	देऽ रे
													३		

नी	-	ध प	-	मे रे	-	नी रे		गरे सा	-	नीध		पमे	गमे	धनी	रेंसां
ना	ऽ	दीं	ऽ	ऽ	ऽ	दे	रे	दींऽ	ऽ	ऽ	देऽ	रेऽ	नाऽ	देऽ	रेऽ
x				२				०				३			

नी	-	ध प	-	मे रे	-	नी रे		गरे सासा		मे ध		नीध	पप	नी	रें
ना	ऽ	दीं	ऽ	ऽ	ऽ	दे	रे	दींऽ	ऽऽ	दे	रे	दींऽ	ऽऽ	दे	रे
x				२				०				३			

गरें	सांसां	नीसां	नीध	नीध,	मेंध	मेंग	मेंग	मेंध	मेंध	नीनी					
दींऽ	ऽऽ	देऽऽ	रेऽ	ऽऽ	नाऽ	ऽदे	ऽऽ	रेऽऽ	ना	ऽऽ					
x				२				०							

अन्तरा

								प	मे	रे	-	ग	-	मे	ध नी
								त	ना	ऽऽ	दे	रे	ऽ	त	दा रे
									०				३		

धनी	सां	ध नी	-	प	-	मे	प	मे	रे	-	ग	-	मे	ध	नी
याऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	त	ना	ऽऽ	दे	रे	ऽ	त	दा	रे
x				२				०				३			

ध	नीसां	-	-	-	-	नी	रें	गं-	रें	--,	नी-	ध-	मे	--,	ग
धा	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	त	दि	याऽ	ऽनं	ऽऽ	तऽ	दाऽ	ऽरे	ऽऽ	त
x				२				०				३			

(ग) रे - - -	सा - नी रे	मं - ग - रे	- - ग मं
दा ऽ ऽ ऽ	रे ऽ		
x	2	0	3
नी - ध - मं	- - ध नी	गं - रें - नी	ध - मं - ग(प)
x	2	0	3
रे - ध नी	गं - रें - नी	ध - मं - ग(प)	रे - ध नी
x	2	0	3
गं - रें - नी	ध - मं - ग(प)	रे - सा	
x	2	0	

राग – गोरखकल्याण

द्रुत एकताल

स्थाई

								सा	रेम	रेरे	
								ता	ऽऽ	नऽ	
								4			
म	–	–	रे	मम	रेसा	नी	ध	सा	ध	सा	रे
दीं	ऽ	ऽ	ता	ऽऽ	रेऽ	दा	ऽ	नी	ओ	दा	नी
x		0		2		0		3		4	
म	–	रे	रे	म	नी	ध	–	–	म	ध	नीरें
दीं	ऽ	ऽ	ओ	दा	नी	दीं	ऽ	ऽ	ओ	दा	नीऽ
x		0		2		0		3		4	
सां	–	–	सांध	सांसां	धप	मम	रेम	रेसा			
दीं	ऽ	ऽ	ता	ऽऽ	रेऽ	दाऽ	ऽऽ	नीऽ			
x		0		2		0		3			

अन्तरा

								रें	सां	सां	ध ध
								य	ल	ल	लि य
									2		0
सां	–	–	ध	सां	सांमं	रेंमं	रें	नी	नी	ध	ध
ला	ऽ	ऽ	त	न	दींऽ	ऽऽ	त	न	न	दे	रे
x		0		2		0		3		4	
सां	–	–	ध	–	नी	ध	म	म	रे	–	म
ना	ऽ	ऽ	दे	ऽ	रे	ना	ऽ	ऽ	दे	ऽ	रे
x		0		2		0		3		4	
सारे	–	–	–	सा	सा–	सा–	मरे–	म–	म–	म	म
ना	ऽ	ऽ	ऽ	धा	किट	तक	धुम	किट	तक	धि	ता
x		0		2		0		3		4	

ध-	ध-	सां-	सां-	मं	रें-	मं	-	मं	-रें	-	सां
किड	नग	तिर	किट	धा	तिर	धा	ऽ	त	ऽदा	ऽ	रे
x		0		2		0		3		4	

ध	-नी	-	ध	रे	-म	-	सा रे	सा
दा	ऽनी	ऽ	त	दा	ऽरे	ऽ	दा	नी
x		0		2		0		3

राग – पूरिया-कल्याण

त्रिताल

स्थाई

ग	– मं धनी सां
ता	ऽ न देऽ रे
3	

नी -ध प –	मं ग – मं ग	रें - सा मं	ग रें सा नी
ना ऽऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ दीं ऽ	तों ऽ ऽ त	दा ऽ नी उ
x	2	0	3

नी रें ग मं	ध रेंसां नीध नीध	पमं धप मंग
द त न दे	रे नाऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ
x	2	0

अन्तरा

मं मं ग मं (ध)	– मं (ध) ध (नी) –
दे रे ना दीं	ऽ त दीं ऽ
0	3

सां सां - सां	नी रें सां –	नी रें गं नी	- रें नी ध
नि ता ऽ न	दे रे ना ऽ	त दि य न	ऽ त दा रे
x	2	0	3

नी मं – ध	मं ग सा सा	सा ग ग ग	मं (ध) मं (ध) ध (नी) ध (नी) ध
त दीं ऽ त	दीं ऽ धा किट	तक धुम किट तक	धि ना किट नाग
x	2	0	3

सां सां रें नी	नी नी ध ध	मं ग ग
तिर किट कडां ऽ	धा कडां ऽ धा	कडां ऽ धा
x	2	0

राग – काफी

त्रिताल

स्थाई

ग रे प | ग ऽ सा रे | म प नी प

| ग – रे सा | – प ग म | पध नीसां धनी सांरें | सांरें गंरें सांनी धप

| म – पध नीध | पम गरे सा प | ग रे

अन्तरा

| म म प ध | सां – नी सां

| ध नी सां रें | गं – रें सां | रें सां नी ध | पम, नी ध

| प म ग रे | सा

राग – भूप

त्रिताल - मध्यलय

स्थाई

			प	ग रेसा -रे ध़
			न	दा रेऽ ऽता रे
				3
ध़सा – – –	– – सा रे	ग रे ग प	ग रेसा -रे ध़
दीं ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ त म	दीं ऽ ऽ त	दा रेऽ ऽता रे
x	2	0	3
ध़सा –.– सा	सां ध ध पध रें	सां -सां रेंगंगं	रें – प धसांसां
दीं ऽ ऽ त	दा रे ऽता रे	दीं ऽ ता रेऽऽ	दीं ऽ ता रेऽऽ
x	2	0	3
ध –रे गपप	ग –गरेसारे गप धसा	रेंगंगंरें सांसांधप गरेसासा	
दीं ऽ ता रेऽऽ	दीं ऽ ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ	ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ	
x	2	0	

अन्तरा

		ग– गग ग	प – सां ध
		रेऽ रेना त	दीं ऽ त न
		0	3
सां –सां सां	सां रें सां –	प गं – रें	सां– –ध प धसां
दीं ऽ त न	दे रे ना ऽ	त दा ऽ रे	ताऽ ऽरे त दा
x	2	0	3
–ध प– –ग	ग गध – प	ग– –रे ––	
ऽ रे ताऽ ऽरे	त दा ऽ रे	ताऽ ऽरे ऽऽ	
x	2	0	

राग – भूप

त्रिताल

स्थाई: नाद विद्या अपरंपार,
कहत गुनीजन बारंबार ॥
अंतरा: सुर संगत सो राग उपजे,
सुर असंगत सो राग बिगड़े,
कहे आनंद सो भेद अपार ॥

स्थाई

सारे ग रे	- सा सारे सा	सा ध़ सा रे	
नाऽ ऽ द	ऽ वि ऽऽ द्या	अ प रं ऽ	
	0	3	

प - ग ग	- ग (प) ग रे	ग प ध सां	- पध सां ध
पा ऽ ऽ र	ऽ क ह त	गु नी ज न	ऽ बाऽ ऽ रं
X	2	0	3

प ग रे सारे	ग
ऽ बा ऽ रऽ	ऽ
X	2

अन्तरा

(प) (प) (प) ग ग ग -	(सां) प प ध -
सु र सं ऽ	ग त सो ऽ
0	3

सां - - सां	ध रें सां -	सां सां ध ध	सां सां रें -
रा ऽ ऽ ग	उ प जे ऽ	सु र अ सं	ग त सो ऽ
X	2	0	3

सांरें गं - रें	सां सां ध प	ग रे ग प	(सां) ध सां - ध	
राउ ऽ ऽ ग	बि ग ड़े क	हे आ नं द	सो भे ऽ द	
x	2	0	3	

प ग रे सारे	ग
अ पा ऽ राउ	ऽ
x	2

राग – मेघ-मल्हार

वि. एकताल

स्थाई: बरसा ऋतु आई बूंदरिया,
चमकत बिजुरिया जिमरा उर पावे ॥
अंतरा: चमक चमके बिजुरिया गरज घटा,
हाये जियरा उर पावे ॥

स्थाई

| , नीसामरेप रे नी-सारे
| बऽ ऽऽऽ रसाऽऋतु
| ४

नी प	सानी सारेनीसारेप	परे रेमपसांनी प	नीमप मपसांनी-पनीसां
आ ऽ	ऽऽ ईबूंऽऽदरि	याऽ चमकऽऽऽत	बिऽऽ जुऽऽरिऽ ऽऽ
x	०	२	०

सां नीनीपमपनीसांरें नीप	नीनीपमपमपनीपप रेनीसा
या जिऽयऽराऽऽऽ ऽऽ	उऽ ऽऽऽऽरऽऽऽ पाऽवेऽ
३	४

अन्तरा

| मपनीप पनीनी
| चमकऽ चमऽ
| ४

सां –	पनीसांरें रेंसां नीसांरेंमंपंरें	नीसां रेंरेंसांनीसांरेंसांसां नीप
के ऽ	बिऽजुरियाऽ गऽऽऽऽर	जऽ घऽऽऽऽऽऽऽ टाऽ
x	०	२

नीनीपमपनीपप रे रेमपसांनीऽप	नीनीपमपनीसांरें नीप	नीनीपमपनीपप रेनीसा
हाऽऽऽऽऽऽये जिमराऽऽऽ	उऽऽऽरऽऽ ऽऽ	पाऽऽऽऽऽऽवेऽऽ
०	३	४

राग – मेघ-मल्हार

द्रुत एकताल

स्थाई: गरज घटा घन कारे,
पावस ऋतु आई,
मोरवा पपीहा बोले,
दादुर शोर मचावे ॥

अंतरा: रैन अंधेरी बिजुरी डरावे,
अजहू नहि नाथ आवे ॥

स्थाई

म	म	म	म								
रे	रे	रे	रे	सा	–	नी	सा	नीसा	रेसा	नी	प
ग	र	ज	घ	टा	ऽ	घ	न	काऽ	ऽऽ	रे	ऽ
x		0		2		0		3		4	

म	–	प	नी	सा	रे	नी	सा	नी	सारे	सा	–
पा	ऽ	व	स	ऋ	तु	आ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ई
x		0		2		0		3		4	

म	म	म	प	नी	प	नीनी	पम	पम	पनी	सां	सां
मो	र	वा	प	पी	हा	बोऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ले
x		0		2		0		3		4	

सांरें	सांनी	सांनी	पनी	पम	पम	रेम	पनी	नीनी	पम	रेसा	नीसा
दाऽ	ऽदु	ऽऽ	रऽ	ऽशो	ऽऽ	रऽ	ऽऽ	मऽ	चाऽ	ऽऽ	येऽ
x		0		2		0		3		4	

अन्तरा

						सां	सां				
म	–	–	मप	नी	प	नी	नी	सां	सां	सां	सां
रै	ऽ	ऽ	नऽ	ऽ	अं	धे	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ
x		0		2		0		3		4	

नी	-	सां	रें	सां	नी	सां	सां	प	नी	प	-
बि	ऽ	जु	री	ऽ	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	वे	ऽ
x		0		2		0		3		8	

म	म	पसां	नीनी	प	प	रेम	पनी	सांनी	पम	रेसा	नीसा
अ	ज	हूऽ	ऽऽ	न	हि	नाऽ	ऽऽ	ऽऽ	थऽ	आऽ	वेऽ
x		0		2		0		2		8	

राग – मियाँ मल्हार

द्रुत एकताल

स्थाई :

म	म			प					ध		
रे	-रे	प	प	नी	ध	नी	सां	–	नी	-प	-प
ता	ऽन	दे	रे	ना	ऽ	दीं	ऽ	ऽ	दीं	ऽतों	ऽऽ
x		0		2		0		3		4	

म	म			प							
रे	-रे	प	प	नी	ध	नी	सां	–	नीनी	पम	नीप
ता	ऽन	दे	रे	ना	ऽ	दीं	ऽ	ऽ	दींऽ	तोंऽ	ऽऽ
x		0		2		0		3		4	

म	म										
रे	-रे	प	प	प	नीध	नीप	ग	–	गम	रे	रे
ता	ऽन	दे	रे	ना	ऽऽ	तऽ	दा	ऽ	रे	ता	रे
x		0		2		0		3		4	

										सा	
सा	सा	नी	ध	नी	सा	रे	रे	सा	सा	सा	म
दा	नी	उ	द	नी	त	त	न	दे	रे	त	दा
x		0		2		0		3		4	

				नी				ध			
रे	प	प	प	ध	नी	सां	सां	नी	नी	पम	प
रे	दा	नी	त	दा	रे	दा	नी	दीं	ऽ	तोंऽ	ऽ
x		0		2		0		3		4	

अन्तरा

म	म		रे								
रे	रे	रे	प	–	प	नी	ध	नी	नी	सां	सां
उ	द	न	दीं	ऽ	त	दीं	ऽ	त	न	न	न
x		0		2		0		3		4	

ध	ध	ध	ध								
नी	नी	नी	–	नी	–	सां	नी	रेंसां	नी	–	–
दीं	ऽ	दीं	ऽ	तों	ऽ	तों	ऽ	तऽ	न	ऽ	ऽ
x		0		2		0		3		4	

											सा
नी	नी	प	प	प	ग	म	रे	रे	सा	सा	म
त	न	दे	रे	ना	त	न	दे	रे	ना	त	दा
x		0		2		0		3		4	

			नी					ध			
रे	प	प	प	ध	नी	सां	सां	नी	नी	पम	प
रे	दा	नी	त	दा	रे	दा	नी	दाँ	ऽ	तोंऽ	ऽ
x		0		2		0		3		4	

राग – गौड़मल्हार त्रिताल

स्थाई: सावरी बदरिया आई रे,
बोले बन में पपीहा रे ॥
अंतरा: साँवरी सूरत मोहन की,
सावरिया बदरिया सावन की,
इन दोऊ मिल मोरा,
मन हर लीन्हो ॥

स्थाई

		मध	पप	म	ग	रे	म	ग	रे	सरे	सासा
		साऽ	वऽ	रो	ऽ	ऽ	ब	द	रि	याऽ	ऽऽ
				0				2			

ग	प	म	–	रे ग	–	मप	मग	म	रे	रे	रे	प	प	–	प
आ	ई	रे	ऽ	ऽ	ऽ	बोऽ	लेऽ	ऽ	ब	न	में	ऽ	प	ऽ	पी
x				2				0				3			

मप	धनी	सां	ध	नी	प
हाऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रे
x				2	

अन्तरा

सां	–	ध	नी	म
साँ	ऽ	व	ऽ	री
			3	

पध	नीसां	–	सां	–	सां	–	सां	नी	रें	सां	नी	सां	रेंगं	मं	गं
सूऽ	ऽऽ	ऽ	र	ऽ	त	ऽ	मो	ह	न	की	सा	व	रीऽ	ऽ	ब
x				2				0				3			

रेंगं	रेंगं	सां	सां	-	ध	नी	म	प	-	मप	मग	म	रे	-	रे
द्ड	रिड	या	सा	ड	व	ड	न	की	ड	द्ड	नड	ड	दो	ड	ऊ
x				2				0				3			

प	प	-	प	-	प	ध	-	नी	म	-	प	-	ध	-	नी
ड	मि	ड	ल	ड	मो	रा	ड	ड	म	ड	न	ड	ह	ड	र
x				2				0				3			

-	सांरें	सांसां	ध	नी	प
ड	लीड	द्धोड	ड	ड	रे
x				2	

राग – सावनी

झपताल

स्थाई: परताप तेरो,
सकल जन उच्चारत तिहारो नाम ॥
अंतरा: नाम रटत दिन, किरपा करो,
सकल जन उचारत तिहारो नाम ॥

स्थाई

गमपमप
पऽऽरऽ

			सा					नी				ग			
ग	—		ग	–	सासारेसा	नी		सा		सागम		गमपमप			
ता	ऽ		ऽ	ऽ	ऽऽऽप	ते		रो		ऽऽ	ऽ	ऽसऽऽकऽ			
×			2			0				3					

			सा							सा		ग			
ग	–		ग	–	सा सारेसा	नी	–	सा		ग		म	पगे		
ल	ऽ		ऽ	ऽ	ऽऽऽन	उ	ऽच्चा			र		ऽ	तऽ		
×			2			0				3					

									म	ग	म				
पधपप	सांरेंसांसां	सां	प	ग	सागमध	प	म	प		ग	सा	गमपमप			
तिऽऽऽ	हाऽऽऽ	रो	ऽ	ऽ	नाऽऽऽ	ऽऽ		म		–	पऽऽरऽ				
×		2			0			3							

अन्तरा

ग	म		प	पधपप	नी	नी	सां		सां	सां	सांरेंसांसां				
ना	ऽ		म	रऽऽऽ	ट	त	नि		स	दि	ऽऽनऽऽ				
×			2			0			3						

												म			
गं	मं		गं	गं	सां	सांरेंसांसां	सांप		ग	–	गमप	प			
कि	र		पा	ऽ	ऽ	कऽऽऽ	रो		ऽ	ऽ	ऽसऽऽकऽ				
..			.						2						

					सा							सा	ग		
	ग	–		ग	–	सा	सारेसा		नी	–सा		ग	म	पग	
	ल	ऽ		ऽ	ऽ	ऽ	जऽन		उ	ऽचो		र	ऽ	तऽ	
×				२					०			३			

											म	ग	म		
	पधपप		सारेसांसां		सां	प	ग		सागमध		पम		प	ग	सागमपमप
	तिऽऽऽ		हाऽऽऽ		रो	ऽ	ऽ		नाऽऽऽ		ऽऽ		म	–	पऽऽऽरऽ
×					२				०				३		

राग – सावनी

त्रिताल

स्थाई: आयो शुभ दिन, आज बनरी के घर,
सुहाग बधायो रे ॥

अन्तरा: शुभ घरी शुभ महूरत,
मंगल गाओ आनंद रंगीले,
बनरा घर आयो रे ॥

स्थाई

				,सरे	सासा	गम	गग पध पप सां
				,आऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽ
				0			3

सां	-	प	गम	प	मप	ग	-	सा	-	धप	मप
यो	ऽ	ऽ	शुऽ	ऽ	भऽ	दि	ऽ	न	ऽ	आऽ	ऽऽ
x				2				0			

ग	-	सा	नी	नी	सा	-	सा	-	ग	म	ग
ज	ऽ	ऽ	ब	न	री	ऽ	के	ऽ	घ	ऽ	र
3				x				2			

-	प	प	सां	सां	-	प	-	ग	सा	गम	ध
ऽ	सु	हा	ऽ	ग	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ब	धाऽ	ऽ
0				3				x			

पम	प	ग	-	सा
ऽऽ	ऽ	मो	ऽ	रे
2				0

अन्तरा

ग	-	म	प	नी
शु	ऽ	भ	घ	री
				2

सां	-	-	सां	-	सां	सां	संनी	रें	सां	-	-
शु	ऽ	ऽ	भ	ऽ	म	हू	रऽ	ऽ	त	ऽ	ऽ
x				2				0			

सांगं	रें	सां	सां	
मंऽ	ऽऽ	ग	ल	
3				

सांरें सांसां प ग	म प म प	ग - सा सां	सां प - ग
गाऽ ऽऽ वो ऽ	आ नं द रं	गी ऽ ले ब	न रा ऽ घ
x	2	0	3

सा सागमध -	म प ग -	सा
र आऽ ऽऽ ऽ	ऽ ऽ मो ऽ	रे
x	2	0

राग – दुर्गा

वि. एकताल

स्थाई : देवी दुर्गे, दया करो,
इन भक्तन की वरदानी ॥
अंतरा : तुम ही हो, करुणा के सागर,
तुम्हरे दरस सो दुःख नसे ॥

स्थाई

						सा- रेपधपमम पध	
						देऽवीऽ ऽऽऽ दुर	
						४	
म	रे	सारेध- -सा-	सारेपधपम पध	म-मपमम रे	-म-प-		
गे	ऽ	ऽऽ ऽऽऽऽ	दऽयाऽऽऽऽकऽ	रोऽऽऽऽऽऽ	ऽऽऽनऽ		
x		0		२			
मपधसां-सांरें	सांरेंसांसां धं	मपमम रे	रेप मपध पध-प				
भऽऽऽक्तन	कीऽऽऽ ऽ	वऽरऽऽ	दाऽ ऽऽऽ ऽऽऽ				
0		३					
म-रे सारेधसा							
नीऽऽ ऽऽऽऽ							
४							

अन्तरा

						म-प-मपधसांधं	
						तुऽमऽहीऽऽऽ ऽ	
						४	
सां सांरेंधसा	सांरेंसांसांसां-धं	मपमम रें-रें	सा- रेधः-सा	ममरेसा रेमपध			
हो ऽऽऽऽ	कऽरूऽभाऽऽ	केऽऽऽ ऽऽऽ	साऽगऽऽऽऽ	तुम्हऽऽऽऽऽ			
x	0		२				

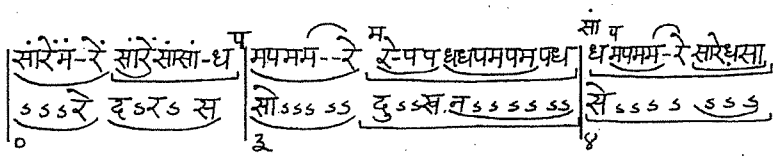
सांरेंमं-रें सांरेंसांसां-ध
प
मपममं--रे
म
रे-पप धधपमपम पध
सां प
धमपममं-रे सारेधसा
ऽऽऽरे दऽरऽ स
सोऽऽऽ ऽऽ
दुऽऽस्व.तऽऽऽऽऽऽ
सेऽऽऽऽ ऽऽऽ
0
३
४

राग – दुर्गा

त्रिताल

स्थाई: अंबे दुर्गे दयानिधे
नमामि, स्मरामि, भजामि ॥
अंतरा: मंत्रमयी देवी प्रणवगायिनी
पशुपति भामिनी माया ॥

स्थाई

												सां	-	धप	मम	रे
												अं	ऽ	बेऽ	दुऽ	र
																2
प	-	-	-	-	म	म	प ध	प	ध	-	धरें	सांसां	धप	मम	रे
गे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	द	या	ऽ	नि	धे	ऽ	अंऽ	ऽऽ	बेऽ	दुऽ	र
x					2			0							2
प	-	-	-	-	म	म	प ध	प	ध	म	म	रे	रे	ध	सा
गे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	द	या	ऽ	नि	धे	न	मा	ऽ	मी	स्म	रा
x					2			0				2			
सा	सा	म	सां ध	सांसां	धप	मम	खा	सारे	मप	धरें					
ऽ	मि	भ	जा	ऽऽ	मीऽ	ऽऽ	ऽऽ	तेऽ	ऽऽ	ऽऽ					
x				2				0							

अन्तरा

म	-	म	सां ध	ध
मं	ऽ	त्र	म	यी
				2

	सां	-	सां	ध	सां	सां	सांरें	मं	रें-	सां-	धप	म	-	म	सां ध	ध
	दे	ऽ	वी	प्र	ण	व	गाऽ	ऽ	मिऽ	नीऽ	ऽऽ	मं	ऽ	त्र	म यी
	x				2				0				3		

	सां	-	सां	ध	सां	सां	सांरें	मं	रें	सां	-	मं	रें	सां	ध -
	दे	ऽ	वी	प्र	ण	व	गाऽ	ऽ	मि	नी	ऽ	प	रु	प	ति ऽ
	x				2				0				3		

	प म	रे	प	प	सारे	मप	धसां	रेंसं	सांरें	-	सां				
	भा ऽ	मि	नी		माऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	या				
	x				2				0						

राग – वाचस्पति

त्रिताल

स्थाई

			ग | मे प नी प
			त | न दे ऽ रे
			2
सां – – सां	– – सां नी	ध – प नी	ध प मे प
ता ऽ ऽ नों	ऽ ऽ त न	दे रे ना त	दा रे दा नी
x	2	0	3
मे ग रे नी	सा सा ग मे ग मे प	मे प नी नी प नी प मे	ग मे ग मे प मे प नी
त दा रे दा	नी ताऽ ऽनों ऽऽ	ताऽ ऽनों ऽऽ तऽ	नऽ ऽदे ऽऽ रेऽ
x	2	0	3

अन्तरा

सां – नीध	पमे नी – धप	मेग प – मेग	रेसा सा ग मे
ता ऽ नोंऽ	ऽऽ ता ऽ नोंऽ	ऽऽ ता ऽ नोंऽ	ऽऽ त दा रे
x	2	0	3
पसां नी – नी	– धप ध प	– प नी सां	गं – – सा
दाऽ ऽ ऽ नी	ऽ ऽऽ ऽ ऽ		
x	2	0	3
मे ग – – मे	प नी सां गं	रें – रें सां	– सां नी –
x	2	0	3
नी ध – ध	प – प मे	– मे ग –	ग रे – रे
x	2	0	3

सा नी सा मे ग	- मे ध प -	मे ग मे प	नी प सां -
त न दे	ऽ रे ता ऽ	नों त न दे	ऽ रे ता ऽ
x	2	0	3

सां - ग म	प नी प सां	- सां - ग	म प नी प
नों ऽ त न	दे ऽ रे ता	ऽ नों ऽ त	न दे ऽ रे
x	2	0	3

राग – नारायणी

त्रिताल

स्थाई

												सा	रे	म	प	ध
												ता	ऽ	न	दे	रे
												3				
सां	-	धसां	नीनी	धप	मम	मप	धप	मम	रेसा	नीध	म	रे	नि	-	ध
ना	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	दींऽ	ऽऽ	तऽ	नऽ	दींऽ	ऽऽ	ऽऽ	त	न	तुं	ऽ	द्रे
x				2				0				3				
सा	-	-	सा	रेम	रेम	पम	पध	सांनी	धप	म	म	प	ध	सां	रें
ना	ऽ	ऽ	त	नऽ	ऽद्रे	ऽऽ	रेऽ	नाऽ	ऽऽ	ऽ	त	न	तुं	ऽ	द्रे
x				2				0				3			
नी	-	ध	सांरें	मंमं	रेंसं	नींध	पम	मम	रेसा	नींध					
वा	ऽ	नी	नाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ					
x				2				0							

अन्तरा

								ध-	-ध	ध-	नी	धप	मम	प	ध
								दींऽ	ऽदीं	ऽऽ	त	दिऽ	यऽ	न	त
								0				3			
सां	-	ध	ध	सांरें	मंरें	सां	-	ध	सां	रें	रें	-	रें	मं	रेंसं
दीं	ऽ	ऽ	त	नऽ	नऽ	दींऽ		त	दि	य	न	ऽ	तुं	ऽ	द्रेऽ
x				2				0				3			
सां	-	ध	ध	नी	धप	म	-	रे	-	-	रे	म	रेसा	रे	सा
ना	ऽ	ऽ	तुं	ऽ	द्रेऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	तुं	ऽ	द्रेऽ	ना	ऽ
x				2				0				3			
धसा	धसा	रेसा	रेम	रेम	पम	रेसा	धसा	रेम	रेम	पम	पध	पध	सांनी	धप	मम
तऽ	ऽदि	ऽऽ	यऽ	नऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	तऽ	ऽदि	ऽऽ	यऽ	नऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
x				2				0				3			

धसां रेंसां, रेंमं | मंमं रेंसां नौंध पंम | मंम रेंसा नौंध |
ऽ दि ऽऽ, यऽ | नऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ | ऽऽ ऽऽ ऽऽ |
२ ०

राग – बसंत त्रिताल

स्थाई: मधुकर आज बसंत बधाई
खिले-खिले नीलम पल्लव पर
आँगन में अमराई ॥

अन्तरा: कानन-कानन उपवन-उपवन खिले
सुमन दल सुरभित कण-कण
ये कैसी मदभरी पी की बैन
पंचम तान सुनाई ॥

स्थाई

								-धसां	-नी	-ध	(प)	-	(ग)म	ग	
								ऽ	मधु	ऽक	ऽर		आ	ऽ	ज ब
(ध)म	-	ध	नी	धनी	सांरें	नीसां	सां	मे	धसां	-नी	-ध	(प)	-	(ग)म	ग
सं	ऽ	त	ब	धाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ई	मधु	ऽक	ऽर	आ	ऽ	ज	ब
(ध)म	-	ध	नी	धनी	सांरें	नीसां	सां	मे	धनी	सां	नी	(नी)ध	मे	(ध)म	ग
सं	ऽ	त	ब	धाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ई	खिलेऽ		ऽ	खि	ले	ऽ	नी	ऽ
ग	रे	ग	मे	ग	रे	सा	सा	सा	ऽ	म	म	(पमम)ग	ग	(ध)मे	ध
ल	म	प	ऽ	ल्ल	व	प	र	आँ	ऽ	ग	न	मे	ऽ	अ	म
सांरें	सांनी	धप	मध	पमं	मेंमं	गरे	सा	-							
राऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ई	ऽ							

अन्तरा

		ध म - ध म ग ग ग	ध म - ध मे ध
		ऽ का ऽ ऽ न ऽ न ऽ न	का ऽ न न
		0	3
सां सां सां सां	सां नी रें सां सां	ध ध नी रें ऽ नी ध	नी ध प प
उ प व न	उ ऽ प व न	सि ले ऽ ऽ ऽ सु	म न द ल
x	2	0	3
(प) ऽ मं ग	ग मं मं ग ग	ध - मं - ग - - -	मंध नी सां - सां - सां
सु र भि त	क ण क ण	ऽ ये ऽ ऽ कै ऽ ऽ ऽ	सी ऽ ऽ ऽ म ऽ द
x	2	0	3
सां - सां - सां - सां	नी रें - सां - सां	सां - पं - पं - गं	गं रें सां सां
भ ऽ ऽ री ऽ ऽ ऽ पी	ऽ की ऽ ऽ बै ऽ न	ऽ पं ऽ ऽ व ऽ म	ता ऽ न सु
x	2	0	3
धनी रें गं रें गं गं गं रें सां नी रें सां नी ध प	मंध पमं गरे सा सा सा नी सा ग मं धनी सां -	सां	
ना ऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽऽऽ	ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ	ऽ	
x	2	0	

राग – बसंत

द्रुत एकताल

स्थाई

सां	–	सां	रें	सां	–	नी	ध	नी	मं	–	ध
द्रे	ऽ	द्रे	ते	नों	ऽ	त	दा	रे	दा	ऽ	नी
x		0		2		0		3		4	

ग	मंध,	नीसां,	नी	ध	मं	ग	मं	ग	रे	सा	सा
त	दिऽ,	ऽऽ,	य	न	ऽ	ऽ	त	दा	रे	दा	नी
x		0		2		0		3		4	

नी	–	सा	मंग	–	ग	गमं,	धनी,	सांरें,	सांनी,	धमं,	धनी,
दीं	ऽ	त	दीं	ऽ	त	दींऽ,	ऽऽ,	ऽऽ,	ऽऽ,	ऽऽ,	ऽऽ,
x		0		2		0		3		4	

अन्तरा

मं	ग	–	मं	–	ध	–	सां	नी	रें	सां	–
य	ला	ऽ	या	ऽ	ल	ऽ	य	ल	ल	ले	ऽ
x		0		2		0		3		4	

रेंनी	–	सां	मं	गं	रें	सां	मं	ग	रे	सा	ऽ
दीं	ऽ	त	दे	रे	ना	दीं	दे	रे	ना	दीं	ऽ
x		0		2		0		2		4	

रेनी	–	सा	मंग	–	ग	धमं	–	मं	ध	सां	सां
ता	ऽ	रे	दा	ऽ	नी	ता	ऽ	रे	दा	ऽ	नी
x		0		2		0		3		4	

राग – बहार

एकताल

स्थाई: सब बन फूली आई बसंत बहार ॥
अन्तरा: कोयल बोले पपीहा बोले,
बोल रहे मुरवा,
गूँज उठी सब बन में,
लछुमन मन भाये ॥

स्थाई

ध	नी	सां	सां	नी	प	प	मप	नीप	ग	-	म
स	ब	ब	न	फू	ऽ	ली	आऽ	ऽऽ	ई	ऽ	ब
×		०		२		०		३		४	

नी	-	ध	धनी	सां	नी	सां	सां	नी ध	नी ध	नी सां	-
सं	ऽ	ऽ	तऽ	ऽ	ब	हा	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ
×		०		२		०		३		४	

अन्तरा

म	म	म	नी	-	ध	नी	सां	नी	सां	-	सां
को	य	ल	बो	ऽ	ले	प	पी	हा	बो	ऽ	ले
×		०		२		०		३		४	

नी	-	सां	नी	सां	-	नीसां	रेंसां	नी	-	ध	-
बो	ऽ	ल	र	हे	ऽ	मुऽ	रऽ	वा	ऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

नी	-	सां	सां	सांमं	गंमं	रें	सां	नीसां	रेंसां	नी	ध
गुं	ऽ	ज	उ	ठीऽ	ऽऽ	स	ब	बऽ	नऽ	में	ऽ
×		०		२		०		३		४	

ध	नी	सां	नी	रें	सां	रें	सां	नी	ध	धनी	सां
ल	छु	म	न	म	न	भा	ऽ	ये	ऽ	ऽऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

राग – तिलक-कामोद

द्रुत एकताल

स्थाई

सा	रे	म	प	सां	–	प	ध	म	ग	रे सा	–
त	न	दे	रे	ना	ऽ	त	न	दे	रे	ना	ऽ
×		०		२		०		३		४	

प़	नी़	सा	रे	ग	सा	रे	म	प	सा–	रे–	म–
उ	द	नी	त	त	न	दे	रे	ना	तिट	कत	गदी
×		०		२		०		३		४	

प–	सां–	सा	रे	म	प	सां	सा	रे	म	प	सां
गन	धाऽ	तिट	कत	गदी	गन	धा	तिट	कत	गदी	गन	धा
×		०		२		०		३		४	

अन्तरा

म	म	प	नी	नी	नी	सां	नी	सां	नी	सां	सां
उ	द	न	दी	म	त	दी	म	त	न	न	न
×		०		२		०		३		४	

प	नी	सां	रेंगं	सां	प	ध	प	म	सा	रे	म
त	न	दे	रेऽ	ना	त	न	दे	रे	तिट	कत	गदी
×		०		२		०		३		४	

प	सां	सा	रे	म	प	सां	सा	रे	म	प	सां
गन	धा	तिट	कत	गदी	गन	धा	तिट	कत	गदी	गन	धा
×		०		२		०		३		४	

राग – कामोद

द्रुत एकताल

स्थाई: जब से लागी लगन
तुम बिन आवत नाहि, मोको चैन ॥
अंतरा: तरपत हूँ रैन दिना
कब आवे मोरे पिया
निसदिन करत ध्यान अब ॥

स्थाई

म	रे	म	रे	प	पनी	संरें	सांसं	धप	पध	पप	गम	रेसा	नीसा		
ज	ब	से	लाऽ	ऽऽ	ऽऽ	गीऽ	ऽऽ	ऽऽ	लऽ	ग	न				
x		0		2		0		3		4					

म	रे	म	रे	प	प	–	मे	प	ध	ध	प	–	गम	रे	
तु	म	बि	न	ऽ	आ	व	त	ना	ऽ	ऽऽ	हि				
x		0		2		0		3		4					

ग	–	मध	प	–	संरें	सांनी	धप	मेप	गम	रेसा	नीसा				
मो	ऽ	ऽऽ	को	ऽ	चैऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	नऽ	ऽऽ				
x		0		2		0		3		4					

अन्तरा

प	प	सां	सां	सां	–	सां	–	सांनी	रें	सां	–				
त	र	प	त	हूँ	ऽ	रै	ऽ	नऽ	दि	ना	ऽ				
x		0		2		0		3		4					

नी	ध	नी	ध	पनी	संरें	सां	–	नी	ध	–	ध	ध	प	–	
क	ब	आऽ	ऽऽ	वे	ऽ	मो	ऽ	रे	पि	या	ऽ				
x		0		2		0		3		4					

ग म	ध प	ग म	प पप	गम रे	सा सा
नि स	दि न	क र	त ध्याऽ	ऽऽ न	अ ब
x	0	2	0	3	4
म रे म रे	प प	– मं	प ध	प –	गम रे
तु म	बि न	ऽ आ	व त	ना ऽ	ऽऽ ही
x	0	2	0	3	4
ग –	मध प	– सांरें	सांनी धप	मंप गम	रेसा नीसा
मो ऽ	ऽऽ को	ऽ चैऽ	ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ	नऽ ऽऽ
x	0	2	0	3	4

राग – शंकरा

त्रिताल

स्थाई

								गरे	सासा	रा	पु		ग	प	नी ध सां
								दिर	दिर	ताऽ	ऽनो	ऽम	त	न	दे ऽ रे
										0				3	
नी	–	–	–	प	–	गरे	सासा	रा	पु		ग	प	नी	ध	सां
ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	दिर	दिर	ताऽ	ऽनो	ऽम	त	न	दे	ऽ	रे
x				2				0				3			
नी	–	–	सां	नी	नीध	पपु	ग	ग	प	नी	ग	नी	नीध	पु	ग
ना	ऽ	ऽ	त	दा	रेऽ	हाऽ	नी	दे	रे	ना	दीं	ऽ	तऽ	नऽ	दे
x				2				0				3			
गप	रे ग	–	सा	प ग	गप										
रेऽ	ना	ऽ	त	दा	रेऽ										
x				2											

अंतरा

								नीध	पप	ग	–	प	–	पनी	सां नी
								देऽ	रेऽ	ना	ऽ	दीं	ऽ	दींऽ	ऽ त
									0					3	
सां	–	सां	प	नी	सां	सां	गं प	रें	गं	ऽऽ	सां	नीसां	नीध	पप	ग गप
दा	ऽ	नी	त	दा	रे	ता	रे	दाऽ	ऽऽ	नीऽ	तऽ	दाऽ	रेऽ	ता	रेऽ
x				2				0				3			
रे ग	–	सा	प	ग	प	नी	प	नी	गंरें	सां	नी	गप	पप	नीनी	नीगं
दा	ऽनी	ऽ	त	दा	नी	त	दा	नी	तऽ	दा	नी	दींऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
x				2				0				3			
गंगं	रेंसं	नीध	पप	गरे	सासा										
ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ										
x				2											

राग – हंसध्वनि त्रिताल

स्थाई: ब्रह्मा शिव हरि अर्चन कीन्हो,
ध्यान धरत सुर नर मुनि ज्ञानी ॥
अंतरा: अष्टभुजा धर खड्ग बिराजे,
सिंह सवार सकल वरदानी ॥

स्थाई

पनी सां सां प	ग प गरे सा-		
ब्रऽ ऽ म्हा शि	ऽ व हऽ रिऽ		
0	2		
(ग)रे (ग)रे (प)ग प	रे - सा -	-(प)ग- -प प	नी नी नी नी
अ र च न	की ऽ न्हो ऽ	ऽ ध्याऽ ऽन ध	र त सु र
x	2	0	3
- पनी -सां रें	गंरेंसां- नीपप ग		
ऽ नर ऽमु नि	ज्ञाऽऽ ऽ नीऽऽ ऽ		
x	2		

अंतरा

(प)ग -प -प	नी नी नी नी		
अऽ ष्ट ऽभु	जा ऽ ध र		
	3		
- नी- -सां नी	सां - सां -	- सांगं -रें रें	नी - प ग
ऽ खऽ ऽग बि	रा ऽ जे ऽ	ऽ सिंऽ ऽह स	वा ऽ र स
x	2	0	3
प नी सां सां	सांनी पप गरे सा-		
क ल व र	दाऽ ऽऽ नीऽ ऽऽ		
x	2		

राग – हंसध्वनि त्रिताल

स्थाई: जब से लागी लगन तोसे,
मोको चैन नहि आये ॥
अंतरा: दिन नहीं चैन रात नही दिया,
तरपत हूं तोरे बिना रे ॥

स्थाई

गप गप नीसां गंरें	सांनी पप गरे सा
जऽ बऽ सेऽ लाऽ	गीऽ लऽ गऽ न
0	2

ग रे – ग प	ग रे – सा –	प ग रे सा प ग	प ग प प प
तो ऽ ऽ ऽ	से ऽ ऽ ऽ	मो ऽ को चै	ऽ न न हि
x	2	0	3

पनी सांरें गं –	सांसां पप गरे सा
आऽ ऽऽ ऽ ऽ	सेऽ ऽऽ ऽऽ ऽ
x	2

अन्तरा

ग प ग प	सां – सां प
दि न न हि	चै ऽ न रा
0	3

– नी सां रेंगं	रें रें सां –	प नी सां गं	रें – सां –
ऽ त न हिऽ	निं दि या ऽ	त र प त	हूं ऽ तो ऽ
x	2	0	3

नीपप ग – – प	ग रे – सा –
रे ऽ ऽ बि	ना ऽ रे ऽ
x	2

राग – रागेश्री

त्रिताल

स्थाई :

रे | सा – ध़ नी़
त | ना ऽ दे रे
2

| सा ग – – | – – ग म | रे -सा – रे | सा – ध़ नी़
| ना ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ दे रे | ना ऽदीं ऽ त | ना ऽ दे रे
x 2 0 2

| सा ग – – | – – ग मनी | ध – – धनी | सांनी -ध -ग -म
| ना ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ दे रेऽ | ना ऽ ऽ तऽ | ऽदा ऽरे ऽदा ऽनी
x 2 0 2

| रे -सा – ध़ | नी़ सा ग म | रे ऽ सा
| दीं ऽतों ऽ |
x 2 0

अन्तरा :

ग | म नीध – नी
ना | द्रे द्रेऽ ऽ तुं
2

| सां – – सां | – – सांनी नीध | नीसां – -सां ध | ध नी सां गंमं
| द्रे ऽ ऽ द्रे | ऽ ऽ दीऽ ऽम | दीऽ ऽ ऽम त | ना ऽ दे रेऽ
x 2 0 2

| रें – सां रेंसां | सांनी ध ध नी | ध -म म म | ग – ग गम
| ना ऽ ऽ तऽ | नाऽ ऽ दे रे | नाऽऽ ऽ त | ना ऽ दे रेऽ
x 2 0 2

रे	-	सा	-	ग-	ग-	म-	म-	ध	ध-	ध	ध-	ध-	नी-	नी-	सां
ना	ऽ	ऽ	ऽ	तिट	कत	गदि	गन	धा	तिट	धा	तिट	कत	गदि	गन	धा
x				२				०				३			

सां-	सां	ध-	ध-	म-	म-	ग	म-	रे	-	सा	
तिट	धा	तिट	कत	गदि	गन	धा	तिट	धा	ऽ	ऽ	
x				२				०			

राग – रागेश्री

त्रिताल

स्थाई

ग	- म ध नी
ता	ऽ न दे रे
	3

सां - ध नी	ध - ग म	रे - सा म	रे सा ध नी
ना ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ दी म	तों ऽ ऽ त	दा रे त न
x	2	0	3
सा म म म	ग म ध ध	नी ध नी सां	सां सां नी सां
दे रे ना त	न दे रे ना	त न दे रे	ना त न दे
x	2	0	3
मं - रेंसां नीसां	रेंरें सांनी धसां नीध	गम रेसा नीसा	
रे ऽ नाऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ	
x	2	0	

अन्तरा

रेंरें सांनी धनी	गम रेसा नीसा ग	म म ध नी
ताऽ नोंऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ द्रि	त न ता रे
	0	3

सां - सां ध	नी सां सांमं गंमं	रें - सां सांरें	नी - ध गम
दा ऽ नी त	दि य नऽ तऽ	दा ऽ नी तऽ	दा ऽ नी तऽ
x	2	0	3
रे - सा सासा	गग गग गग म	- समु धध धध	धध नी - नीनी
दा ऽ नी तिट	कत गदी गम धा	ऽ तिट कत गदी	गन धा ऽ तिट
x	2	0	3
सांसां सांसां गंमं रें	सां - ध ग	म रे सा	
कत गदी गन धा	ऽ ऽ धा ऽ	ऽ धा ऽ	
x	2	0	

राग – बागेश्री

मध्यलय त्रिताल

स्थाई: श्याम घन छाए मोरे मन भावे
कारी बिजुरिया बरसन लागी ॥
अन्तरा: कैसी ऋतु बरखा की आई
बरसन लागे रिमझिम मेहा ॥

स्थाई

		रे	
नी	सा	म(ग)	म धध
श्या	ऽ	म	ऽ घन
		३	

नी	-	ध	म(ग)	म(ग)	रे	म(ग)	म(ग)	सा(रे)	-	सा	सारे	सारे	-रे	नी	ध
छा	ऽ	ये	मो	ऽ	रे	म	न	भा	ऽ	वे	काऽ	रीऽ	ऽऽ	बि	जु
x				२				०				३			

सा	-	सा	म	म	मप	मपध	प	ग	रे	गम	
रि	ऽ	या	ब	र	सऽ	ऽऽऽ	न	ला	ऽ	गेऽ	
x				२				०			

अन्तरा

		म	
ग	म	ध	-नी ध
कै	ऽ	सी	ऽऋ ऽ
		३	

(नी)सां	-	-	नी	सां	रेंरेंसांनी	सांनी	सांरें-सां	नी	-	ध	ध	ध	सांमं	गं	-मं-
तु	ऽ	ऽ	ब	र	खाऽऽऽ	ऽऽ	ऽऽऽकी	आ	ऽ	ई	ब	र	सऽ	ऽऽ	तऽ
x				२				०				३			

रें	-	सां	नी	ध	म(ग)	रे	म(ग)	सा(रे)	-	सा	
ला	ऽ	गे	रि	म	झि	ऽ	म	मे	ऽ	हा	
x				२				०			

मंप नीप ग –	ग गमं मंप नीनी	नी सांगं सां
पिऽचऽ का ऽ	रीं नंऽ ऽद ऽके	द लिऽ या
x	२	०

राग – मालकंस

मध्यलय त्रिताल

स्थाई: मंगल मूरत मारुत नंदन
सकल अमंगल मूल निकंदन
पवनतनय संतन हितकारी
हृदय बिराजत अवध बिहारी ॥

अन्तरा: मात पिता गुरु गणपति सारद
सिवा समेत संभू सुक नारद
बंदौ रामलखन वैदेही
जय तुलसी के परम सनेही ॥

स्थाई

							(ग)
				साम	गम	ग	सा	-	नीसा	-नी	-ध
				मं ऽ	ऽऽ	ग	ल	ऽ	मू ऽ	ऽर	ऽत
				0				3			

सा	-	सा	नी	साम	गम	ग	सा	-	नीसा	गसा	सा	ध	नी	-ध	म
मा	ऽ	रू	त	नऽ	ऽऽ	न्द	न	ऽ	सक	लऽ	अ	मं	ऽ	ऽग	ल
x				2				0				3			

		(सा)										(म)		(नी)	
नी	-	नी	ध	नी	सा	सा	सा	सा	मग	गग	गम	ध	ध	-	नी
मू	ऽ	ल	नि	कं	ऽ	द	न	ऽ	पऽ	वन	तऽ	न	य	ऽ	सं
x				2				0				3			

सां	सां	नी	ध	नी	सां	सां	सां	-	नीसां	-गं	सां	ध	नी	ध	म
त	न	हि	त	का	ऽ	री	ऽ	ऽ	हृऽ	दय	बि	रा	ऽ	ज	त
x				2				0				3			

ग	म	ग	सा	गमधनी	सांगंसांनी	धमगसा	नीसा								
अ	व	ध	बि	हाऽऽऽ	ऽऽऽऽ	रीऽऽऽ	ऽऽ								
x				2											

अन्तरा

		- मग मग गम	(नी) ध - - - नीनी
		ऽ माऽ ऽऽ तपि	ताऽ ऽ ऽ गुरु
		०	२
सां सां - नी ध	धनी सां - सांसां	- नी नी - नी	सां - - सांनी
ग ण ऽ प ति	साऽ ऽऽ र ऽद	ऽ सि वा ऽस	मे ऽ ऽ तसं
x	२	०	२
नी सां गं सां	(नी नी) धध मधनी ध म	- (म) ग - (म) ग	म (नी) ध - नीनी
ऽ भू स्तु क	नाऽ ऽऽऽ र द	ऽ बं ऽ दौ	रा ऽ ऽ मल
x	२	०	२
सां सां नी ध	सांसांनी धनी सांसां	- नी सां गंसां	ध नी ध म
ख न वै दे	देऽऽ ऽऽ ही ऽ	ऽ ज य तुल	सी ऽ के ऽ
x	२	०	२
ग म ग सा	गमधनी सांगंसांनी धमगसा नीसा		
प र म स	नेऽऽऽ ऽऽऽऽ हीऽऽऽ ऽऽ		
x	२		

राग – मालकंस

द्रुत एकताल

स्थाई: दुर्गे भवानी, दया कर माता
नित दुख हरनि, सुख भरनि
दुरगति नाशिनी ॥
अन्तरा: हाथ खड्ग त्रिशूल धार
गले सोहे मुंड माल
असुर संहारिणी जग जानी ॥

स्थाई

						सांनी	सांगं	सांनी	धम	गसा	नीसा
						दु ऽ	ऽऽ	ऽऽ	गेऽ	ऽऽ	भऽ
						0		2		4	
म नी	–	ध	–	नी	सां	सांनी	सांगं	सांनी	धम	गसा	नीसा
वा ऽ		ऽ	ऽ	नी	ऽ	दु ऽ	ऽऽ	ऽऽ	गेऽ	ऽऽ	भऽ
x		0		2		0		2		4	
नी	–	ध	–	नी	सां	सां	ध	नी	ध	म	म
वा ऽ		ऽ	ऽ	नी	ऽ	द	या	ऽ	क	ऽ	र
x		0		2		0		2		4	
ग	–	म	–	ग	सा	ध	नी	सा	ग	म	म
मा ऽ		ऽ	ऽ	ता	ऽ	नि	त	दु	ख	ह	र
x		0		2		0		2		4	
म	ग	म	ध	नी	नी	ध	नी	सां	सां	धनी	सांगं
नि	सु	ख	भ	र	नि	दु	र	ग	ति	नाऽ	ऽऽ
x		0		2		0		2		4	
मंगं	सांनी	सांगं	सांनी	धनी	धनी	सां	सां	–	नी ध	–	मग
ऽऽ	शिऽ	नीऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	दु	ऽ	गेऽ	ऽ	भऽ
x		0		2		0		2		4	

अंतरा

म

ग	–	ग	मनी	ध	ध	नी	सां	नी	सां	–	सां
हा	ऽ	थ	खऽ	ड्	ग	त्रि	शू	ल	धा	ऽ	र
x		0		2		0		3		४	

ध	नी	सांगं	मं	गं	सां	ध	–	नी	ध	–	ध
ग	ले	सोऽ	ऽ	हे	ऽ	मुं	ऽ	ड	मा	ऽ	ल
x		0		2		0		3		४	

नीसां	नीगं	सांनी	धनी	सांनी	धम	गम	धम	गम	गसा	नीसा	–
अऽ	ऽसु	ऽऽ	रऽ	ऽऽ	संऽ	हाऽ	ऽऽ	रिऽ	णीऽ	ऽऽ	ऽ
x		0		2		0		3		४	

गम	गम	धम	धनी	धनी	सांनी	सां	–	–	नी ध	–	मग
जऽ	ऽग	ऽऽ	जाऽ	ऽनी	ऽऽ	दु	ऽ	ऽ	र्गे	ऽ	भऽ
x		0		2		0		3		४	

राग – जोगकौंस

त्रिताल

स्थाई

		म ग	म ग सा ध़ नी
		ता	ऽ न दे रे
			3

सा ग म गम	सां सां ध ध	पम प म ग	मप मम ग –
ना ऽ ऽ दींऽ	ऽ त न न	देऽ रे ना त	दाऽ रेऽ दा ऽ
x	2	0	3
सा ग ग ग	म म म नी ध	ध ध नी नी	सां सां धनी गं–
नी त न न	त न न त	न न दे रे	ना ऽ दींऽ ऽ
x	2	0	3
सां – ध –	प – ग म	ग – सा	
तों ऽ दीं ऽ	तों ऽ दीं ऽ	तों ऽ ऽ	
x	2	0	

अन्तरा

ग	म ध – नी
ना	द्रे द्रे ऽ तुं
	3

सां – – सां	नी ध नी –	सां – सां ध	ध नी सां मं
द्रे ऽ ऽ द्रे	ऽ ऽ दीं ऽ	तों ऽ म त	ना ऽ दे रे
x	2	0	3
गं सां सांगं नी	सां ध नी ध	म म ग –	मप मम ग सा
ना ऽ तऽ ना	ऽ दे रे ना	ऽ त ना ऽ	देऽ रेऽ ना ऽ
x	2	0	3

							नी								
-	ग	ग	ग	म	म	म	ध	ध	ध	नी	नी	सां	सां	धनी	गं
ऽ	त	न	न	त	न	न	त	न	न	दे	रे	ना	ऽ	दींऽ	ऽ
x				२				०				३			

सां	-	ध	-	प	-	ग	म	ग	-	सा
तों	ऽ	दीं	ऽ	तों	ऽ	दीं	ऽ	तों	ऽ	ऽ
x				२				०		

राग – नायकी कानडा तीनताल

स्थाई

								मप	नीसां	रें	सांरें	संनी	पनी	पम	रेसा
								ता	ऽऽ	न	देऽ	रेऽ	देऽ	रेऽ	ताऽ
								0				3			
गा	–	गा	म	नी	म	प	–	म	प	नी	प	सां	नी	रें	सां
दीं	ऽ	ऽ	त	दे	रे	ना	ऽ	उ	द	न	दीं	ऽ	त	दे	रे
x				2				0				3			
गा	–	गम	पम	रेसा	रे	नी	सा								
दीं	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	तऽ	दे	रे	ना								
x				2											

अंतरा

								स–	ऽप	––	नीप	–	नी	सां	नी
								ताऽ	ऽनो	ऽऽ	तऽ	ऽ	नो	ऽ	म
								0				3			
सां	–	–	रेंरें	सांनी	सांनी	सांरें	सां	सांमं	गं	मं	रें	सां	रें	नी	सां
दे	ऽ	ऽ	रेऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ना	तऽ	दा	ऽ	रे	ता	रे	दा	नी
x				2				0				3			
प	नी	सां	नीप	म	प	ग	म	मग	म प	प	मग	म	रे	सा	सा
त	दा	ऽ	रेऽ	ता	रे	दा	नी	त	दा	ऽ	रेऽ	ता	रे	दा	नी
x				2				0				3			
सारे	सारे	मरे	मप	मप	मप	नीप	नीसां								
देऽ	ऽरे	ऽऽ	नाऽ	देऽ	ऽरे	ऽऽ	नाऽ								
x				2											

राग – आभोगी कानडा — द्रुत एकताल

स्थाई

ग	–	म	सां	ध	सां	ध	ग	–	म	रे	सा
ता	ऽ	न	दीं	ऽ	त	न	दीं	ऽ	त	दे	रें
x		0		2		0		3		4	
ध	सा	रे	ग	रे	सा	म	ध	सां	रें	सां	ध
ओ	दा	नी	ओ	दा	नी	त	दा	नी	त	दा	नी
x		0		2		0		3		4	
सा	गं	–	रें	सां	ध	सां	–	ध	म	ग	म
दीं	ऽ	ऽ	त	न	दीं	ऽ	ऽ	त	न	दीं	ऽ
x		0		2		0		3		4	
–	रे	सा	मग	सागं	मध	सांरें	सांसां	धध	मम	गग	रेसा
ऽ	त	न	दींऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
x		0		2		0		3		4	

अन्तरा

ग	ग	ग	म	ध	म	ध	सांध	सां	रें	सां	–
दे	रे	ना	दीं	ऽ	ऽ	दे	ऽऽ	रे	त	दीं	ऽ
x		0		2		0		3		4	
ध	सां	रें	गं	मं	रें	–	सां	सां	ध	–	म
त	दि	य	न	त	दा	ऽ	रे	त	दा	ऽ	रे
x		0		2		0		3		4	
म	रे	–	सा	गं	–	मं	रें	सां	ग	–	म
त	दा	ऽ	रे	दीं	ऽ	ऽ	त	न	दीं	ऽ	ऽ
x		0		2		0		3		4	
रे	सा	रे	ध़	–	सा	–	रे	ग	–	–	ध
त	न										
x		0		2		0		3		4	
–	सा	–	रे	ग	–	–	ध़	–	सा	–	रे
x		0		2		0		3		4	

राग – कौंसी-कानडा वि. तीनताल

स्थाई : सोहे राजाराम अवध में,
लखन सिया समेत ॥
अंतरा : राम जपत मारुत सुत हरषे,
हरषे देव मुनि सारे ॥

स्थाई

सामगमगसा, धनीप
सो ऽ ऽ ऽ हे ऽ, राऽजा

सा – धनी सा	नीसा मरे सा ध	नीप म ऽ गम	मधनीधध, मगमधनी सां धनीप
रा ऽ ऽ ऽ म	अव धऽ ऽ ऽ	ऽऽ में ऽ लख	न ऽ ऽ ऽ ऽ सि ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
x	2	0	3

सां – – रेरेंसांनीसांनीसारें	रां – रेंसां रेरेंसांनीसां धु–	नी प – नीनीपमनीप
या ऽ ऽ स ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽऽ मेऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽऽ	ऽ त ऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
x	2	0

गम रेसा
ऽऽ ऽऽ
3

अन्तरा

गम धनीसांनी
रा म जऽऽप

सां – धनी सां	सां सांसां नीसांगंसांसां ध	धनी सांगंमंगंसां धनीप मपनीपप	गम रेसा
त ऽ माऽ रु	त सुत ठाऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽे	हर षे ऽ ऽ देव मुऽनि साऽ ऽ ऽ	ऽऽ रेऽ
x	2	0	3

राग – कौंसी कानडा — त्रिताल

स्थाई

सां	– सांनी धप मग
ता	ऽ नऽ ऽऽ नऽ
	3

मनी – ध –	म – पम गम	ग रे सा ध	नी सा मग म
दीं ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ नऽ नऽ	दे रे ना उ	द न दाऽ ऽ
×	2	0	3

म मध – ध नी	– सांनी धनी सांरें	सां नी सां रें रेंसां	नीसां सांनी धध मग
नी दीं ऽ दीं	ऽ दींऽ ऽऽ ऽऽ	ऽ ऽ ऽ साऽ	ऽऽ नऽ ऽऽ नऽ
×	2	0	3

अन्तरा

ग	म धध धनी नीनी
न	न दींऽ ऽन ऽऽ
	3

सां – – –	ध – नी –	सां – – ध	नी सांगं मंगं सांनी
दीं ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ दीं ऽ	नों ऽ ऽ न	दि यऽ ऽऽ नऽ
×	2	0	3

सां – सां रेंरें	सांनी सांरें सांनी नी	प – प धध	मध नीध मग मनी
ना ऽ न नऽ	दिऽ ऽऽ यऽ नऽ	ना ऽ न नऽ	दिऽ ऽऽ यऽ नऽ
×	2	0	3

सा – सा साग	–ग गम –म मध	–ध धनी –नी	
ता ऽ न दींऽ	ऽदीं ऽऽ दीं ऽऽ	दींऽ ऽदीं ऽऽ	
×	2	0	

राग – बिहाग (त्रिताल)

स्थाई

		| साऽ ऽपऽ ऽऽ पऽ |	– मे ग म
| ग – – नीध	| पमे गम गरे सानी	| साऽ ऽम ऽऽ मऽ |	– ग प म
| ग म ग सा	| ग म ग –	| – नी – प	| नी सां नी –
| गम पनी – गम	| प गम गरे सानी |		

अन्तरा

		| ग म ग म	| प प नी नी
| सां – – पनी	| सांगं रेंसां नीध प	| नी ध प ध	| मे प ग म
| ग – – नीध	| पम गम गरे सानी		

प्रातः गेय राग

क्रमांक	राग	बोल	ताल	रचनाकार
1.	भैरव	सरगम	रूपक	श्री. का.शं. बोडस
		शंकर गिरिजापति	द्रुत एकताल	श्री. का.शं. बोडस
2.	अहीर भैरव	आई बसंत की ऋतु	मध्य त्रिताल	श्री. का.शं. बोडस
3.	नट भैरव	शंकर शरण तोरे	वि. एकताल	श्री. का.शं. बोडस
		गुनीजन बखाने	मध्य त्रिताल	श्री. का.शं. बोडस
4.	बंगाल भैरव	शंकर डमरू बाजे	द्रुत एकताल	वीणा सहस्रबुध्दे
		तराना	मध्य त्रिताल	वीणा सहस्रबुध्दे
5.	भैरवी	सरगम	त्रिताल	श्री. का.शं. बोडस
6.	कोमल रिषभ आसावरी	जोगिन के भेख धरे	त्रिताल	श्री. प्रल्हाद गानू
7.	भटियार	माता महाकाली	द्रुत एकताल	श्री. का.शं. बोडस
		तराना	द्रुत त्रिताल	वीणा सहस्रबुध्दे
8.	जोगिया	हरि हर का भेद न पायो	त्रिताल	श्री. शं.श्री. बोडस
9.	देशकार	तराना	त्रिताल	श्री. का.शं. बोडस
10.	गुर्जरी तोड़ी	तराना	द्रुत आड़ाचौताल	श्री. का.शं. बोडस
11.	भूपाल तोड़ी	पार करो मोरी नैया	वि. त्रिताल	वीणा सहस्रबुध्दे
		तुम बिन कौन सहाय	त्रिताल	वीणा सहस्रबुध्दे
		तराना	द्रुत त्रिताल	वीणा सहस्रबुध्दे

अपरान्ह व सायं गेय राग

क्रमांक	राग	बोल	ताल	रचनाकार
12.	शुद्ध सारंग	तपन लागी ये धरा	वि. एकताल	वीणा सहस्रबुद्धे
		आओ रे आओ	मध्य त्रिताल	वीणा सहस्रबुद्धे
		कारे बदरा		
13.	मध्यमाद सारंग	तराना	स्थाई - त्रिताल	वीणा सहस्रबुद्धे
			अंतरा - एकताल	वीणा सहस्रबुद्धे
14.	भीम	दर्शन देहो महादेव	वि. त्रिताल	श्री. शं.श्री. बोडस
15.	भीमपलासी	सरगम	त्रिताल	श्री. शं.श्री. बोडस
16.	मारवा	तराना	मध्य त्रिताल	वीणा सहस्रबुद्धे
		चलो हटो जाओ मुरारी	द्रुत एकताल	श्री. प्रल्हाद गानू
17.	पूरियाधनाश्री	अजहू न आये सखिरी	वि. त्रिताल	वीणा सहस्रबुद्धे
18.	मुलतानी	पकरि मोरी बैयाँ	त्रिताल	श्री. प्रल्हाद गानू
		तराना	मध्य त्रिताल	वीणा सहस्रबुद्धे
		तराना	द्रुत त्रिताल	वीणा सहस्रबुद्धे
19.	मधुवंती	तराना	त्रिताल	वीणा सहस्रबुद्धे
20.	धानी	आनंद मनाओ आज	वि. रूपक	श्री. का.शं. बोडस
		अब घर आयो	त्रिताल	श्री. का.शं. बोडस
21.	अंबिका	ए मातु अंबिके	वि. एकताल	श्री. का.शं. बोडस
		जय कालिके	त्रिताल	श्री. का.शं. बोडस
		तराना	द्रुत आड़ाचौताल	श्री. का.शं. बोडस
		तराना	द्रुत आड़ाचौताल	श्री. का.शं. बोडस

रात्रि गेय राग

क्रमांक	राग	बोल	ताल	रचनाकार
22.	यमन	तराना	मध्य एकताल	वीणा सहस्रबुद्धे
		तराना	त्रिताल	वीणा सहस्रबुद्धे
23.	गोरखकल्याण	तराना	द्रुत एकताल	वीणा सहस्रबुद्धे
24.	पूरिया-कल्याण	तराना	त्रिताल	वीणा सहस्रबुद्धे
25.	काफी	सरगम	त्रिताल	श्री. शं.श्री. बोडस
26.	भूप	तराना	मध्य त्रिताल	वीणा सहस्रबुद्धे
		नाद विद्या अपरंपार	त्रिताल	श्री. प्रल्हाद गानू
27.	मेघ-मल्हार	बरखा ऋतु आई	वि. एकताल	श्री. का.शं. बोडस
		गरज घटा घन कारे	द्रुत एकताल	श्री. का.शं. बोडस
28.	मियाँमल्हार	तराना	द्रुत एकताल	श्री. का.शं. बोडस
29.	गौडमल्हार	सावरी बदरिया आई	त्रिताल	श्री. प्रल्हाद गानू
30.	सावनी	परताप तेरो	झपताल	श्री. प्रल्हाद गानू
		आयो शुभ दिन	त्रिताल	श्री. प्रल्हाद गानू
31.	दुर्गा	देवी दुर्गे दया करो	वि. एकताल	वीणा सहस्रबुद्धे
		अंबे दुर्गे दयानिधे	त्रिताल	श्री. का.शं. बोडस
32.	वाचस्पति	तराना	त्रिताल	वीणा सहस्रबुद्धे
33.	नारायणी	तराना	त्रिताल	वीणा सहस्रबुद्धे
34.	बसंत	मधुकर आज बसंत बधाई	त्रिताल	श्री. का.शं. बोडस
		तराना	द्रुत एकताल	वीणा सहस्रबुद्धे
35.	बहार	सब बन फूली आई	एकताल	श्री. ल.श्री. बोडस
36.	तिलक-कामोद	तराना	द्रुत एकताल	श्री. का.शं. बोडस
37.	कामोद	जब से लागी लगन	द्रुत एकताल	श्री. का.शं. बोडस
38.	शंकरा	तराना	त्रिताल	वीणा सहस्रबुद्धे

क्रमांक	राग	बोल	ताल	रचनाकार
39.	हंसध्वनि	ब्रह्मा शिव हरि	त्रिताल	श्री. का.शं. बोडस
		जब से लागी लगन	त्रिताल	श्री. का.शं. बोडस
40.	रागेश्री	तराना	त्रिताल	श्री. का.शं. बोडस
		तराना	त्रिताल	वीणा सहस्रबुध्दे
41.	बागेश्री	श्याम घन छाए	मध्य त्रिताल	वीणा सहस्रबुध्दे
42.	मधुकौंस	आवो सजना आवो	वि. त्रिताल	श्री. का.शं. बोडस
		आ जाओ श्याम खेलो ना होरी	त्रिताल	श्री. का.शं. बोडस
43.	मालकौंस	मंगल मूरत मारुत नंदन	मध्य त्रिताल	श्री. का.शं. बोडस
		दुर्गे भवानी	द्रुत एकताल	श्री. का.शं. बोडस
44.	जोगकौंस	तराना	त्रिताल	श्री. का.शं. बोडस
45.	नायकी कानडा	तराना	द्रुत त्रिताल	वीणा सहस्रबुध्दे
46.	आभोगी कानडा	तराना	द्रुत एकताल	वीणा सहस्रबुध्दे
47.	कौंसी कानडा	सोहे राजाराम अवध में	वि. त्रिताल	वीणा सहस्रबुध्दे
		तराना	त्रिताल	वीणा सहस्रबुध्दे
48.	बिहाग	सरगम	त्रिताल	श्री. शं.श्री. बोडस

पुस्तक की बंदिशों के प्रकाशित ध्वनिमुद्रण

क्रमांक	राग	बोल	प्रकाशक – शीर्षक
1.	नट भैरव	शंकर शरण तोरे	H.M.V. - "Tribute to Pt. Omkarnath Thakur"
		गुनीजन बखाने	H.M.V. - "Tribute to Pt. Omkarnath Thakur"
2.	भटियार	माता महाकाली तराना	B.M.G. Crescendo, - "Bandish"
3.	देशकार	तराना	Rhythm House - "Pancharatna" classics
4.	भूपाल तोड़ी	पार करो मोरी नैया तुम बिन कौन सहाय तराना	Navras records - "Morning ragas"
5.	शुद्ध सारंग	तपन लागी ये धरा आओ रे आओ कारे बदरा	Rhythm House - "Ritu Chakra" classics
6.	मधमाद सारंग	तराना	Navras Records
7.	भीम	दर्शन देहो महादेव	B.M.G. Crescendo - "Bandish"
8.	मारवा	तराना चलो हटो जाओ मुरारी	B.M.G. Crescendo - "Bandish"
9.	पूरिया धनाश्री	अजहूँ न आए सखि री	B.M.G. Crescendo - "Mood Pensive"
10.	मुल्तानी	तराना	Music Today - "Gwalior Gharana"

क्रमांक	राग	बोल	प्रकाशक – शीर्षक
11.	धानी	आनंद मनाओ आज अब घर आयो	B.M.G. Crescendo - Mellifluous Melodies
12.	मधुकौंस	आवो सजना आवो	Rhythm House - "Rituchakra" classics
		आ जाओ श्याम	B.M.G. Crescendo - "Bandish"
13.	मालकौंस	मंगल मूरत मारुत नंदन	Rhythm House - "The Wonder of Nad & Swara" classics
		दुर्गे भवानी	Rhythm House - "Pancharatna" classics
14.	जोगकौंस	तराना	Venus records - "Gopika chali Surana Vana"